RNI No. : UPHIN-2009/29369

डाक पंजीकरण : KANPUR HO/002/2022-24
प्रधान डाकघर कानपुर-डाक प्रेषण दिनांक 29/30

वार्षिक सदस्यता शुल्क 100/-

द्रविड़ भारत

www.dbindia.org.in

सामाजिक परिवर्तन का मासिक पत्र

अक्टूबर-2022 | वर्ष - 14 | अंक : 09 | मूल्य : 5/-

Youtube पर Dravid Bharat Channel को Subcribe करें और दबायें।

सम्पादकीय

RNI No. : UPHIN-2009/29369

संपादक : उमेश्वरी देवी, मो.: 9005204074
संरक्षक मण्डल : मा. रामदीन अहिरवार (महोबा), मा. राम अवतार चौधरी (अधिशासी अभियन्ता), मा. छविलाल वर्मा (चरखारी), मा. हरिनाथ राम (दिल्ली), मनीष कुमार मो. 9415053621
राज्य ब्यूरो प्रमुख उत्तर प्रदेश :
सुनील कुमार, ढेलवा, गाजीपुर (उ.प्र.), मो.: 9935363730, 9170836363
योगेन्द्र कुमार (ब्यूरो चीफ चित्रकूट मण्डल) मो.: 8299162841
क्षेत्रीय सम्पादकीय कार्यालय :
40/69, डी-5, श्यामलाल का हाता, परेड, कानपुर (उ.प्र.), मो. : 8756157631
ब्यूरो प्रमुख कानपुर मण्डल :
पुष्पेन्द्र गौतम, मल्हौसी, औरेया, उ.प्र. मो.: 9456207206
हरियाणा राज्य :
डा. रमेश रंगा, ग्राम-सराय, औरंगाबाद, पो.-बहादुरगढ़,जिला-झज्जर (हरियाणा),09416347052
कानूनी सलाहकार : एड. रामप्रकाश अहिरवार, एड. यू.के. यादव, मोती लाल वर्मा, एड. विजय बहादुर सिंह राजपूत, एड. रमाकान्त धुरिया, सुशील कुमार, कानपुर
मध्य प्रदेश राज्य : पुष्पेन्द्र कुमार
कार्यालय : ग्रा. व पो.-रामटौरिया, जिला-छतरपुर
छत्तीसगढ़ राज्य :
दिलीप कुमार कोसले, मो. : 09424168170
दिल्ली प्रदेश : C/o अनिल कुमार कनौजिया C-260, हर्ष विहार, हरिनगर एक्सटेंशन पार्ट-III, बदरपुर, नई दिल्ली-44, मो. : 09540552317
राजस्थान राज्य : रघुनाथ बौद्ध, श्याम रघु फुट वियर, दुकान नं.-1, गणेश मार्केट, पुलिस चौकी के सामने, अलवर, जिला-अलवर-301001, मो. : 09887512360, 0144-3201516
चिरंजीलाल बैरवा (व्यावस्थापक) मेहरा आदर्श विद्या मन्दिर, भीम नगर कालोनी, राज भट्टा, दिल्ली रोड, अलवर, जिला-अलवर, मो.-09829855349
बाबूलाल बौद्ध, अलवर, मो.-08058198233
संपादकीय/विज्ञापन प्रसार/पंजीकृत कार्यालय :
ग्रा व पो.-रिवई (सुनैचा), जिला-महोबा (उ.प्र.)
मो. : 9005204074, 8756157631
E-mail : dravinbharat1@gmail.com
प्रकाशक, मुद्रक एवं स्वामी
उमेश्वरी देवी द्वारा ग्रा. व पो.-रिवई (सुनैचा), जिला महोबा से प्रकाशित व श्रेय ऑफसेट प्रा. लि., 109/406, नेहरू नगर, कानपुर, 84/1, बी, फजलगंज, कानपुर से मुद्रित

प्रकाशित पत्रिका में प्रकाशित लेख, सामग्री, में संपादक की सहमति अनिवार्य नहीं है। इसमें किसी भी प्रकार का दावा या विचार मान्य नहीं होगा। लेख के विवादित होने पर लेखक ही उत्तरदायी होगा समस्त विवादों का निपटारा महोबा न्यायालय में होगा पत्रिका का संपादन एवं संचालन पूर्णतयः अवैतनिक एवं अव्यवसायिक है।

मिशन को बढ़ाने के लिए सहयोग करें -
भारतीय स्टेट बैंक, शाखा-पी.पी.एन. मार्केट, कानपुर
खाता सं.-33496621020 • IFSC CODE-SBIN0001784

अशोक विजयदशमी

वर्तमान में दशहरे का स्वरूप

यह पर्व आश्विन मास की शुक्ल-पक्ष की दशमी को मनाया जाता है। हिन्दू मान्यताओं के अनुसार इसी दिन रामचन्द्र ने लंका पर चढ़ाई करके महाराजा रावण पर विजय प्राप्त की थी। अर्थात् राम ने रावण की हत्या की थी। विजयदशमी को राष्ट्रीय पर्व की मान्यता प्राप्त है। वैसे मुख्य रूप से यह हिन्दू वर्ण-व्यवस्था के आधार पर क्षत्रिय का त्योहार माना जाता है क्योंकि यहा वर्ण-व्यवस्था के आधार पर ही सब चीजों का बंटवारा निर्धारित है चाहे वह जन्म, कर्म हो या फिर रस्मो-रिवाज या त्योहार आदि ।

दशमी के दिन लगातार दस दिनों तक धमूधाम के साथ निकाली जाती है और रावण वध का प्रदर्शन होता है तथा मेले-तमाशे का आयोजन और दुर्गा पूजन होता है। उसी दिन हिन्दुओं के लिए नीलकठ पक्षी का दर्शन बड़ा शुभ माना जाता है।

दशहरे से जुड़ी हिन्दू मान्यताएं

दशहरे के सम्बंध में कही जाने वाली कुछ कथाएं इस प्रकार हैं-

1. एक बार पार्वती जी ने शंकर से पूछा कि ''लोगों में दशहरे का त्योहार प्रचलित है, इसका क्या फल है?'' तो शिवजी ने बताया कि ''आश्विन शुक्ल दशमी को सायंकाल में तारा उदय होने के समय 'विजय' नामक काल होता है जो सब इच्छाओं को पूर्ण करने वाला होता है। शत्रु पर विजय प्राप्त करने के लिए राजा को युद्ध के लिए इसी समय प्रस्थान करना चाहिए।'' इसकी पुष्टि हिन्दू ग्रंथ ज्योतिर्निबन्ध से भी होती है। इस दिन यदि श्रवण नक्षत्र का योग हो तो और भी शुभ है। रामचन्द्र जी ने इसी 'विजय-काल' में लंका के महाराजा रावण पर विजय पाई थी। इसलिए यह दिन हिन्दुओं के लिए बहुत बड़ी खुशी का पवित्र दिन माना जाता है। और क्षत्रिय लोग इसे अपना प्रमुख त्योहार मानते है क्योंकि रामचन्द्र भी क्षत्रिय थे।

हिन्दुओं की ऐसी मान्यता है कि शत्रु से युद्ध करने का प्रसंग न होने पर भी इस विजय-काल में राजाओं को अपनी सीमा का उल्लंघन अवश्य करना चाहिए । अपने तमाम दल-बल को सुसज्जित करके पूर्व दिशा में जाकर शमी वृक्ष का पूजन करना चाहिए । क्योंकि यह शमी वृक्ष सभी पापों को नष्ट करने वाला है तथा शत्रुओं को भी पराजय देने वाला है। इस वृक्ष ने अर्जुन के धनुष को धारण किया था और रामचन्द्र के लिए भी विजय की घोषणा की थी। पार्वती ने शमी वृक्ष के बारे में स्पष्टीकरण चाहा तो शिवजी ने उत्तर दिया ''दुर्योधन ने पांडावों को जुए में हराकर इस शर्त पर वनवास दिया था कि वे बारह वर्ष तक जैसे चाहें वैसे प्रकट रूप से वन में रह सकते हैं। लेकिन एक वर्ष बिलकुल अज्ञातवास में रहना होगा। यदि इस वर्ष में उन्हें कोई पहचान लेगा तो उन्हें बारह वर्ष और भी वनवास भोगना पड़ेगा। उस अज्ञातवास के समय अर्जुन अपना धनुष बाण इसी शमी वृक्ष पर रखकर राजा विराट के यहाँ बृहन्नला (हिजड़ा) के वेश में रहे थे। विराट के पुत्र कुमार ने गौओ की रक्षा के लिए बृहन्नला को अपने साथ लिया। शमी ने अर्जुन के शास्त्रों की रक्षा की थी और अर्जुन ने सही समय पर शस्त्र उठाकर शत्रुओं पर विजय प्राप्त की थी।''

विजय दशमी के दिन रामचन्द्र ने लंका पर चढ़ाई करने के लिए प्रस्थान करने के समय शमी वृक्ष ने कहा था कि आपकी विजय होगी। इसलिए उसी विजय काल में ही शमी वृक्ष की भी पूजा का महत्व है।

2. एक बार राजा युधिष्ठिर ने भी कृष्ण से विजयदशमी के बारे में पूछा तो कृष्ण ने बताया कि- ''हे राजन! विजयदशमी के दिन राजा को स्वयं अलंकृत होकर अपने दासों और हाथी, घोड़ों का श्रृंगार करना चाहिए तथा गाजे-बाजे के साथ मंगलाचरण करना चाहिए। उसे इस दिन अपने पुरोहितों को साथ लेकर पूर्व दिशा में प्रस्थान करके अपनी सीमा से बाहर जाना चाहिए और वहां शस्त्र-पूजा करके अष्टदिग्पालों तथा पार्थ देवता की वैदिक मंत्रों से पूजा करनी चाहिए। शत्रु की मूर्ति पुतला बनाकर उसकी दाती में बाण भेदना चाहिए तथा उसी समय पुरोहित से मंत्रों का उच्चारण करवाना चाहिए। ब्राह्मण की पूजा करके हाथी, घोड़ा, शस्त्र आदि का निरीक्षण करना चाहिए। यह सब क्रिया सीमान्त में करके अपने महल को वापस आना चाहिए जो राजा इस विधि से पूजन करके विजयदशमी की रस्म पूरी करता है वह सदा अपने शत्रु पर विजय प्राप्त करता है।'' हिन्दू धर्म में दशहरा (विजयदशमी) के लिए उपरोक्त प्रकार की मान्यताएं और कथाएं प्रचलित और मान्य हैं। किन्तु यह उनका अपना दृष्टिकोण है। जो हमने आपकी जानकारी के लिए उल्लेखित किया है।

वास्तविकता

आइए, अब हम दशहरे पर एक तर्कशील एवं बुद्धिवादी दृष्टिकोण रखते हुए उसके वास्तविकता स्वरूप को देखने-परखने का प्रयास करें।

भारत में दशहरे को हिन्दू लोग प्रायः दो तरीको से मनाते हैं। एक राम द्वारा रावण पर जीत कराके तथा दूसरे बड़े पैमाने पर देवी (दुर्गा) का पूजन करके। एक ही त्योहार में दोनों बातों का इतने बड़े पैमाने पर साझा प्रदर्शन होना किसी के लिए भी वास्तविक सच्चाई (कारण) जानने की उत्सुकता के साथ-साथ बहुत कठिनाई पैदा कर देते है। क्योंकि हिन्दू लोग स्वयं कारण कुछ बताते हैं लेकिन काम कुछ और ही करते नजर आते हैं। इस उपलक्ष्य में दस दिन पहले से ही हर गांव, मोहल्ले, गली, चौक, बाजार में एक जगह रामलीला का प्रोग्राम तो होता ही है। लेकिन उससे भी आश्चर्य की बात यह है कि इस दशहरा की तैयारी में महीनों पहले से प्रत्येक गांव, मोहल्ले, गली, चौक, बाजार में जितना भी संभव हो सके उतनी संख्या में दुर्गा की मूर्तियाँ स्थापित की जाती हैं । इन मूर्ति स्थलों की संख्या रामलीला स्थलों से दस गुना ज्यादा होती है। आम तौर पर देखने में यह दुर्गा माता का ही कोई महत्वपूर्ण त्योहार नजर आता है लेकिन वास्तविकता रूप में इसे लोग राम से जोड़ते हैं। इस भूल-भूलैया की स्थिति से बाहर निकलकर हम जानने का प्रयास करेंगे कि इस त्योहार के पीछे की वास्तविक सच्चाई क्या है? दशहरा को लोग विजयदशमी का नाम क्यों देते हैं? इसके पीछे का इतिहास क्या है? तथा इसका इस देश के मूलनिवासी बौद्धों से क्या सम्बंध है ?

सम्राट अशोक और विजयदशमी का इतिहास

दशहरें के सम्बन्ध वास्तव में भारत के महान चक्रवर्ती सम्राट अशोक से है। महाराजा अशोक विश्वविख्यात महान शासक थे। उनका साम्राज्य बहुत विशाल था। किसी भी राज्य विस्तार के हिसाब से उनकी महानता को मापना ठीक नहीं। उनकी महानता तो उनके मानववादी सिद्धान्तों के कारण है। इन्हीं उच्च सिद्धान्तों के आधार पर ही उन्होंने शासन किया। अपने दसवें धम्म अभिलेख में उन्होंने कहा कि ''राजा की कीर्ति का मूल्यांकन प्रजा की नैतिक उन्नति से किया जा सकता है।'' यही कारण था कि सम्राट अशोक ने युद्ध का विनाशकारी मार्ग छोड़कर बुद्ध के शांतिपूर्ण मार्ग का अनुसरण किया ।

उन्होंने अपनी प्रजा को सद्धम्म के कल्याणकारी मार्ग पर चलने का आदेश दिया और अहिंसा तथा सदाचार को अपने जीवन का आदर्श बनाया। उनका उद्देश्य था प्रजा की सर्वोपरि उन्नति। वास्तव में वह समस्त विश्व के प्राणियों का कल्याण चाहने वाले थे। जिसके लिए उन्होंने अपनी तरफ से कोई कसर नहीं छोड़ी। भारत की गौरवशाली कला और संस्कृति की शुरुआत भी सम्राट अशोक के समय से ही

हुई। धम्म और बौद्ध स्तूपों की स्थापत्य कला इसके सर्वश्रेष्ठ प्रमाण हैं। उन्होंने आज से दो हजार वर्ष पूर्व भारत और पूरे विश्व को वही पाठ पढ़ाया जिसे आज संसार के सभी शांतिप्रिय देश संयुक्त राष्ट्र संघ के माध्यम से संचालित व क्रियान्वित करना चाहते हैं।

ऐसे महान सम्राट अशोक का जन्म इस पावन भारत भूमि पर अशोकावदान ग्रंथ के अनुसार लगभग 304 ईसा पूर्व चैत्र मास में शुक्ल–पक्ष की अष्टमी को हुआ था दिव्यावदान में अशोक की माता का नाम सुभद्रांगी मिलता है और उनके पिता का नाम बिन्दुसार था। जो मगध देश के राजा थे। जिनकी राजधानी पाटलिपुत्र थी। अशोक बचपन से कही तीव्र और कुशाग्र बुद्धि का धनी था। बड़ा होने के नाते शीघ्र ही उसने सभी शास्त्रों का ज्ञान अर्जित कर लिया था। अशोक के सौतेले भाईयों में सबसे बड़े भाई का नाम सुसीम था। इसलिए राजा का उत्तराधिकारी होने का हक उसी का था किन्तु अशोक की तीव्र बुद्धि को देखकर सभी अमात्य अशोक को ही उत्तराधिकारी बनाने के पक्ष में थे। इससे असमंजस में पड़े राजा को सभी राजकुमारों की परीक्षा लेकर भी सुसीम और अशोक दोनों को उत्तराधिकारी बनाना पड़ा। महाराजा बिन्दुसार ने सुसीम को उपराजा बनाकर तक्षशिला भेजा और अशोक को उज्जैन के लिए रवाना किया। उज्जैन के रास्ते में ही विदिशा नगरी पड़ती थी। अशोक ने उज्जैन जाते समय यहीं पड़ाव डाला था। यहीं पर स्कन्धमित्रा की अशोक से मुलाकात हुई और स्कन्धमित्रा को देखकर अशोक बहुत प्रभावित हुआ। अशोक ने अपने आमात्यों से कहकर उसके माता–पिता का पता लगवाया और स्कन्धमित्रा को पसन्द करने की बात कही। यह जानकर नगर सेठ ने अपनी कन्या का विवाह कुमार अशोक के साथ कर दिया। वास्तव में यह कन्या शाक्य कुल से ही थी किन्तु परिस्थितिवश उसके पूर्वज विदिशा में आकर बस गए थे। यही देवी, विदिशा महादेवी के नाम से जानी जाती है। किन्तु वर्तमान सूत्रों के अनुसार महान अशोक की रानी का नाम असंधिमित्रा बताया जाता है।

अशोक असंधिमित्रा के साथ उज्जैन पहुँचे वहाँ की शासन स्थिति ठीक हुई। विवाह के एक वर्ष बाद रानी ने पुत्र को जन्म दिया। जिसका नाम महिंद (महेन्द्र) रखा गया । इसके दो वर्ष के बाद एक पुत्री का जन्म हुआ जिसका नाम संघमित्रा (संघमित्रा) रखा गया ।

कुछ समय पश्चात महाराज बिन्दुसार मरणासन्न अवस्था पर पड़ गए तो उस समय पाटलीपुत्र में न तो सुसीम था और न ही अशोक। महाराज बिन्दुसार की इच्छा थी की इस समय सुसीम ही उनका उत्तराधिकारी बने किन्तु उसके आमात्यों के विचारानुसार केवल अशोक ही योग्य उत्तराधिकारी हो सकता था। उन्होंने अशोक को तुरन्त उज्जैन से पाटलिपुत्र आने का संदेश भिजवाया । अशोक सन्देश पाते ही पाटलिपुत्र आ गया सुसीम को भी संदेश दिया गया था किन्तु वह अज्ञात कारणों से समय पर नहीं आ सका।

महाराजा ने जब देखा कि सुसीम का कहीं कोई अता–पता ही नहीं, केवल अशोक ही उसके पास है। राजा ने अपना अंतिम समय नजदीक आता देख अपने सिर से राजमुकुट उतारा और अशोक के सिर पर रख दिया। इस प्रकार आमात्यों के प्रयत्नों से अशोक को सम्राट का पद प्राप्त हुआ। अशोक के राजा बनते ही राजमहल मे खुशियाँ छा गई। अशोक सन् 273 ईसा पूर्व के लगभग 34 वर्ष की आयु में मगध के राज्य सिंहासन पर आसीन हुआ। जनता को अशोक की सामर्थ्य और शक्ति पर पूरा विश्वास था ।

अशोक के सम्राट बनने से राजधानी पाटलिपुत्र में उत्सव मनाया जाने लगा, किन्तु उपराजा सुसीम को जब यह समाचार मिला, तो वह बहुत क्रोधित हुआ और उसने अपने सैनिको के साथ राजसिंहासन को बलपूर्वक हथियाने के लिए तक्षशिला से पाटलिपुत्र की ओर कूच कर दिया। कहते हैं कि अशोक ने पाटलिपुत्र के बाहर अस्त्र–शस्त्रों से सुसज्जित सैनिकों को बिठा दिया। जैसे ही राजकुमार सुसीम ने पाटलिपुत्र की सीमा में प्रवेश किया अशोक के सैनिको ने उसे घेर कर मार गिराया। इस प्रकार अशोक के समक्ष अब कोई राज्य का दावेदार नही रहा और वह मगध के एकछत्र महाराजा बन गए ।

सम्राट अशोक के बड़े भाई उपराजा सुसीम की मृत्यु के समय उसकी रानी सुमना गर्भवती थी। उसने सोचा कि अशोक के सैनिक उसे भी मार डालेंगे इसलिए अपनी जान बचाने और गर्भस्थ शिशु की रक्षा के लिए उसने एक चांडाल के घर जाकर शरण ली । कष्टों में जीवन निर्वाह करती हुई कुछ दिनो पश्चात् न्यग्रोध (वट=बरगद) के पेड के नीचे उसने एक पुत्र को जन्म दिया। गांव के एक मुखिया ने राजपरिवार के सदस्य होने के कारण माता–पुत्र दोनो की सात वर्ष तक अपने संरक्षण में रखकर सेवा की। न्यग्रोध वृक्ष के नीचे जन्म लेने के कारण इस बालक का नाम 'न्यग्रोध कुमार' पड़ा ।

उसके श्रामणेर होने के सम्बन्ध में कहा जाता है कि उस युग में बौद्ध धर्म का अत्यधिक प्रचार था। अच्छे–अच्छे बौद्ध भिक्खु अपने त्यागमय जीवन और विद्वत्ता से लोगों को बौद्ध धर्म के प्रति आकर्षित कर रहे थे। अतः 'न्यग्रोध' भी विद्वान बौद्ध भिक्खुओं के संपर्क में रहकर बौद्ध बन गया । श्रीलंका के महावंस नामक बौद्ध ग्रंथ में न्यग्रोध के विषय में विस्तृत वर्णन मिलता है।

साभार : त्योहारों के रहस्य
रोशन बौद्ध
(पृ.सं. 11 से 15 तक)

राष्ट्रीय आजीविका सेवा केन्द्र

द्वारा पूर्व की भाँति इस वर्ष भी 10+2 बेरोजगार युवक/युवतियों हेतु <u>निःशुल्क एक वर्षीय ओ लेवल कम्प्यूटर सॉफ्टवेयर एक वर्षीय ओ लेवल कम्प्यूटर हार्डवेयर मेंटिनेंस एवं ग्यारह माह विशेष प्रशिक्षण योजना प्रशिक्षण</u> में प्रवेश प्रारम्भ हो चुके हैं –

अनुसूचित जाति/जनजाति हेतु

इलायापेरूमल कमेटी (1969) की संस्तुति को स्वीकार करते हुए भारत सरकार ने प्रशिक्षण एवं रोजगार महानिदेशालय, डी.जी.ई. एण्ड टी.के. अधीन देश के राज्यों में अनुसूचित जाति/जनजाति हेतु अध्यापन एवं मार्ग दर्शन केन्द्रों के स्थापना की है। इसी क्रम में वर्ष 1970 ये यह केन्द्र कानपुर में अनुसूचित जाति/जनजाति की सेवा में कार्यरत है।

उद्देश्य :

1. शिक्षित अनुसूचित जाति/जनजाति के बेरोजगार अभ्यर्थियो के सही मार्गदर्शन देते हुए सही दिशा निर्देशन उपलब्ध कराना।
2. अध्यापन एवं प्रशिक्षण के द्वारा बेरोजगार अनुसूचित जाति/जनजाति के अभ्यार्थियों को रोजगार पाने की क्षमता में वृद्धि करना।
3. अनुसूचित जाति/जनजाति अभ्यार्थियों के रोजगार बाजार की सूचना देना एवं रोजगार प्राप्त करने में अनेक कार्यक्रमों द्वारा विविध स्तर पर उनकी सहायता करना। केन्द्र द्वारा तीन माह, छः माह हिन्दी व अंग्रेजी में कम्प्यूटर ऑपरेशन का कोर्स निःशुल्क संचालित किया जा रहा है।

रा० आ० से० के० कानपुर की गतिविधियाँ

पंजीयन पूर्व मार्गदर्शन • सम्प्रेषण पूर्व मार्गदर्शन • साक्षात्कार पूर्व मार्गदर्शन • सामूहिक मार्गदर्शन • व्यक्तिगत/सूचना मार्गदर्शन आत्मविश्वास कार्यक्रम • पुनरीक्षण कार्यक्रम • व्यवसायिक सूचना • प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी हेतु परीक्षा पूर्व प्रशिक्षण। • टंकण एवं आशुलिपि प्रशिक्षण • कर्मचारी चयन आयोग एवं अन्य समूह ''ग'' परीक्षा की तैयारी हेतु विशेष कम्प्यूटर ऑपरेशन प्रशिक्षण कार्यक्रम • प्रशिक्षण योजना • ओ लेवल कम्प्यूटर सॉफ्टवेयर • ओ लेवल कम्प्यूटर हाईवेयर मेंटिनेंस • स्व–रोजगार • उच्च शिक्षा के साथ में भविष्यी नियोजन हेतु परामर्श • कम्प्यूटर प्रशिक्षण कार्यक्रम • साक्षात्कार कला • अभिभावकों से विचार विमर्श • रोजगार सम्बन्धी अन्य समस्यायें।

<u>निःशुल्क प्रशिक्षण कार्यक्रम</u>

क्रम सं०	कोर्स/अवधि	न्यूनतम शैक्षिक योग्यता	आयु	छात्रवृत्ति/अन्य
01	ओ लेवल कम्प्यूटर सॉफ्टवेयर प्रशिक्षण (NIELIT से) 01 वर्षीय	इण्टरमीडिएट	18–30	निःशुल्क किताबें/लेखन सामग्री + 1000 छात्रवृत्ति प्रति माह
02	ओ लेवल कम्प्यूटर हार्डवेयर मेंटिनेंस प्रशिक्षण (CHM) (NIELIT से) 01 वर्षीय	इण्टरमीडिएट (विज्ञान)/ITI	18–30	उपरोक्त
03	विशेष प्रशिक्षण योजना (11 माह) लिपिकीय वर्ग भर्ती परीक्षा तैयारी	इण्टरमीडिएट	18–27	उपरोक्त

भारत सरकार
श्रम एवं रोजगार मंत्रालय

National Career Service

नेशनल कैरियर सर्विस सेंटर फॉर एस.सी./एस.टी.
जी.टी. रोड, कानपुर

राज कुमार
उप क्षेत्रीय रोजगार अधिकारी
मो० न० 7988193472

Youtube पर Dravid Bharat Channel को Subcribe करें और 🔔 दबायें।

दीपावली

कार्तिक मास की अमावस्या के दिन दीपावली (दीवाली) मनाई जाती है। इस दिन लक्ष्मी पूजा बड़ी धूमधाम से की जाती है और उत्सव मनाया जाता है। जिस प्रकार रक्षाबंधन ब्राह्मणों का, दशहरा क्षत्रियों का और होली शूद्रों का तथाकथित त्योहार है उसी प्रकार हिन्दू विचार के अन्तर्गत दीवाली वैश्यों का त्योहार माना जाता है। किन्तु इसे भी हिन्दू मनाते हैं।

हिन्दू मान्यताओं में दीपावली का स्वरूप

इस अवसर पर हिन्दू लोग अपने घरों की साफ सफाई करते हैं। घरों को अच्छी तरह सजाते हैंऔर अंधेरा होने से पहले ही दीप अथवा मोमबत्ती (कैंडिल) जलाकर रोशनी करते हैं। बड़े पैमाने पर आतिशबाजी की जाती है। दीवाली के दिन कुछ मूर्खतापूर्ण कार्य भी करने की प्रथा है। हिन्दू समाज के आवारा लोग इस रात जमकर जुआ खेलते है और अधिकांश लोग कंगाल हो जाते हैं। हालांकि उनको जुआ खेलने के लिए भी उनका हिन्दू धर्म और उसकी मान्यताएं ही मजबूर करती है। कहा जाता है कि उस दिन जो जुआ नहीं खेलेगा वह अगले जन्म में छछुन्दर का जन्म पाएगा। अगले जन्म में छछुन्दर न होने के लिए लोग मजबूर और भयभीत होकर जुआ खेलते हैं। लेकिन वर्तमान में इसे लोग हार–जीत के लिए बड़े पैमाने पर खेलते हैं।

इतना ही नहीं, इस दिन जितने भी चोर बदमाश किस्म के लोग होते हैं वे सभी अपने हथियार–छुरी, तलवार से लेकर बन्दूक और बम तक की आजमाइश इसी दिन करते हैं। जितने भी बुरे कर्म में लिप्त लोग हैं सभी अपने बुरे काम की शुरुआत इसी दिन से करना शुभ मानते हैं। तंत्र–मंत्र वाले भी इसी दिन अपनी विद्या जगाने का काम करते हैं।

स्त्रियाँ लक्ष्मी देवी का व्रत करती हैं साथ ही गणेश जी का भी पूजन करती हैं, इस दिन जहाँ सभी हिन्दू लोग अपने–अपने आराध्य देवता की पूजा करते हैं वही सभी हिन्दू लक्ष्मी और गणेश की पूजा भी जरूर करते हैं, यही शुभ माना जाता है। इस पूजा में लोग लक्ष्मी देवी से ढेर सारे धन की अपेक्षा करते हैं। जीवन की सुख–समृद्धि के साथ धन सम्पत्ति की विशेष उम्मीद में ही लक्ष्मी पूजा की जाती है। दीवाली पूजन की रात को जब सब सोकर सुबह जागते हैं तो उससे पहले ही स्त्रियाँ घर से बाहर तक सूप बजाकर गाती फिरती हैं इस सूप पीटने के पीछे उनका मानना होता है कि जब घर में लक्ष्मी का वास हो गया तो दरिदर्य (दरिद्रता) को घर से निकाल देना चाहिए। उस दरिद्रता को घर से निकाल देना चाहिए । उस दरिद्रता को निकालने के लिए ही वे सूप पीट–पीटकर तोड़ डालती हैं और उसे गांव व मोहल्ले के बाहर फेंक देती है। घर में आकर लक्ष्मी जी से कहती हैं। कि दरिद्र चला गया और अब आप निर्भय होकर यहाँ निवास करें ।

दीवाली के दिन ही घर के सभी सामान नये खरीदने का प्रचलन है। घर के बर्तन कपड़े, जेवर तथा मिठाइयाँ खरीदने को शुभ माना जाता है। लोग मिठाइयाँ खाते भी हैं और उपहार भी देते हैं।

दीपावली मनाने की हिन्दू मान्यताएं

हिन्दू लोग दीपावली का त्योहार क्यों मनाते हैं ? इसके उत्तर में उनका कोई एक निश्चित मत नहीं है। कुछ हिन्दुओं का मानना है कि एक दिन देवता विष्णु ने राजा बलि को पाताल लोक का इन्द्र (राजा) बनाया था और उनका देवलोक सुरक्षित बच गया था। तब विष्णु और इन्द्र आदि देवताओं ने मिलकर बड़ी प्रसन्नतापूर्वक खुशी के दिये जलाकर दीवाली मनाई । उनके स्वर्ग का सिंहासन बचे रहने की खुशी में शुरु किया गया यह उत्सव कुछ समय बाद त्योहार बन गया। जिसे दीवाली कहा जाता है।

इसी प्रकार एक दूसरा मत है कि इसी दिन समुद्र मंथन के समय क्षीर सागर से लक्ष्मी जी प्रकट हुई थीं और भगवान विष्णु को अपना पति स्वीकार किया जिसकी खुशी में दीवाली मनाई जाने लगी ।

तीसरा मत है कि इसी दिन राजा विक्रमादित्य ने अपने संवत की रचना की थी। बड़े–बड़े विद्धानों को बुलाकर मुहूर्त निकलवाया था कि नया संवत चैत्र सुदी प्रतिपदा से चलाया जाए ।

एक चौथी कहानी भी इस दीवाली के त्योहार से सम्बन्धित है। नरकासुर नाम का एक अनार्य राजा था। उसने लगभग 16 हजार आर्य योद्धाओं सहित आर्य स्त्रियों को अपने वश में कर रखा था। कृष्ण यद्यपि अनार्य था परन्तु वह कौम का द्रोही था और उसने आर्यों की स्त्रियों की मुक्ति हेतु नरकासुर से संघर्ष किया और सत्यभामा को धोखा देकर अपने मोहपाश में फंसाकर ले गए ।

पाँचवा मत ही इनका सबसे प्रचलित मत है। कहा जाता है कि रामचन्द्र जी चौदह वर्ष का वनवास बिताकर लंका के महाराज रावण की हत्या करके इसी दिन अयोध्या वापस आये थे। उनके अयोध्या आने की खुशी में उनके स्वागत में अयोध्यावासियों ने दीप जलाकर नगर को सजाया। अच्छे–अच्छे पकवान व मिठाइयाँ बाँटी तभी से यह दीवाली मनाई जाने लगी ।

वास्तविकता

दीपावली हिन्दुओं का बहुत खर्चीला त्योहार है। इस त्योहार के बाद कुछ लोग तो मालामाल हो जाते हैं लेकिन अधिकतर आर्थिक तंगी के शिकार भी हो जाते हैं इसलिए हमें भी सावधान हो जाने की जरूरत है। त्योहार के नाम पर कई करोड रुपयों के बारूद आतिशबाजी के रूप में नष्ट कर दिये जाते है। यह किसी भी विकासशील देश के लिए समझदारी का काम नहीं हो सकता यदि इन्हीं रुपयों को राष्ट्रीय विकास के लिए खर्च किया जाता तो निश्चित रूप से देश के विकसित होने में मदद मिलती । लेकिन इन वैश्य लोगों (व्यापारियों) को देश के हित की किसी भी बात से क्या लेना देना। इन्हें तो केवल अपने लिए अधिक से अधिक धन इकठ्ठा करने से मतलब है। इस बात में कोई विवाद नहीं कि दीपावली का यह त्योहार धन और व्यापार से ही खास सम्बन्ध रखता है।

एक पुराने हिन्दू ग्रन्थ 'दम्पत्ति चतुर्थी' में भी इस त्योहार को वैश्य जाति का त्योहार कहा गया है जो कि पूर्ण रूप से सत्य भी है। इस त्योहार का पूरा लाभ केवल वैश्य लोगों को ही मिलता है। अथवा वर्तमान में उन लोगों को भी इसका लाभ है। जिन्होंने अपने को वैश्य मान लिया अर्थात् उनके पेशो को अपना लिया। फिर भी पूर्ण रूप से लाभ लेने वाला वैश्य समाज ही है। दीपावली को मनाने वाला प्रत्येक हिन्दू, सिन्दूर, रंगोली अथवा किसी भी आधुनिक साधन स्टीकर आदि से अपना पूजा–स्थल और अपने दरवाजे पर 'शुभ–लाभ' अवश्य लिखता है और इस शुभ–लाभ का प्रचलन व्यापारी वर्ग में बहुत अधिक होता है। यहाँ तक कि उसकी तिजोरी पर भी और तिजोरी के अन्दर भी 'शुभ–लाभ' निश्चित रूप से लिखा हुआ मिलेगा और दीवाली से ही अपने नये खाते की शुरुआत करता है। रजिस्टर पर भी वह 'शुभ–लाभ' अवश्य ही लिखेगा क्योंकि दीपावली का पर्व उसके लिए शुभ ही शुभ है।

तीन चार माह की बरसात में उसे जो घाटा उठाना पड़ता है वह पूरा घाटा दीवाली के दो–तीन दिन में ही पूरा हो जाता है और चूंकि यह लाभ दीपावली के अवसर पर होता है। इसलिए उसके लिए दीवाली शुभ हो जाती है। बाकी लोगों को इस त्योहार से क्या मिलता है? सही मायनों में कुछ नहीं। तो इस त्योहार में उनकी क्या भूमिका है? उन्हें क्या कहा जाना चाहिए। खास कर उन लोगों को जो केवल किसी भी तरह परम्परा का निर्वाह करना आवश्यक मानते है। ये वे ही लोग है जिन्हें कहा जाता है बहुजन समाज, जिसमें आते हैं– हम और आप। जो इस देश का मूलनिवासी समाज है।

इस दृष्टि से उसे उल्लू कहा जाता है। जी हाँ! इसमें कोई सन्देह नहीं दीवाली के दिन यही मूलनिवासी समाज उल्लू बनता है। स्पष्टीकरण करने के लिए विचार कर सकते हैं कि दीवाली के दिन सबसे ज्यादा पैसा कौन लोग कमाते हैं? व्यापार जगत में सबसे बड़ा कब्जा किसका है? बाजार की बड़ी–बड़ी दुकानों में अपने मूलनिवासी समाज के लोगों की दुकाने ढूँढने से भी नहीं मिलेंगी, यानी वे सभी दुकाने वैश्य व्यापारियों की होती हैं। मिठाई की दुकान से लेकर कपड़ा, बर्तन, घरेलू समान तथा जेवर आदि की दुकानें इन्हीं सवर्णो की ही होती हैं। परन्तु खरीदारी करने वालों का सबसे बड़ा समूह मूलनिवासी समाज का होता है। दीवाली के दिन खरीदारी करने के लिए यह समाज पूरी साल व्यवस्था करता है। वह अपनी गाढ़ी कमाई को बचा कर रखता है। इसलिए कि दीवाली पर कुछ खरीदारी कर सके। इसी कमाए गए धन (रुपये) का ही नाम है लक्ष्मी, लक्ष्मी को धन की देवी कहा जाता है। इसी से हिन्दू लोग धन को भी लक्ष्मी ही कहते हैं। लक्ष्मी यानी आपका धन ।

अब देखिए लक्ष्मी का वाहन उल्लू है, तभी तो लक्ष्मी का नाम उलूकवाहिनी भी है। दीवाली के दिन हमारा धन, यानी बहुजन समाज का धन (लक्ष्मी) बहुजन समाज के माध्यम से अर्थात अपनी सवारी (उल्लू) के माध्यम से चलकर बनिये के घर चला जाता है। इस प्रकार वैश्य बठे ही बैठे बहुजन समाज की पूरे साल की कमाई दीवाली के अवसर पर प्राप्त कर लेता है और यह बहुजन समाज पूरे साल के लिए कंगाल हो जाता है। तो बताइये ! उल्लू हमारे अलावा और कौन हो सकता है ?

सच कहें तो लक्ष्मी की सवारी का सही अर्थ भी यही है अन्यथा लक्ष्मी जैसी धन की देवी को सवारी करने के लिए एक उल्लू ही मिला, यह बात कुछ हजम नहीं होती । उसे तो सबसे महंगे वाहन में चलना चाहिए। इस धन की देवी की इतने बड़े पैमाने पर पूजा की जाती है फिर भी इस देश की आर्थिक हालत पर तरस आता है। क्या कारण हो सकता है जहाँ स्वयं लक्ष्मी की पूजा होती हो उस देश में सबसे ज्यादा लोगों की सबसे बड़ी समस्या दो वक्त की रोटी ही है। सबसे ज्यादा भिखारियों की संख्या भारत में ही है। हम सभी जानते हैं कि उल्लू एक ऐसा पक्षी है जिसे उजाले में दिखाई नहीं पड़ता । यह रात्रिचर पक्षियों की श्रेणी में आता है। एक तो अंधेरे में उड़ने वाला, दूसरे भयानक बदसूरत भी होता है। लक्ष्मी जी को पता नहीं कैसे उल्लू पसन्द आ गया। उल्लू को उजाला बिलकुल पसन्द नहीं और लक्ष्मी जी का दौरा भी शायद साल में एक बार ही होता है। वह भी दीवाली के अवसर पर वैसे तो उनके हिसाब से ठीक

Youtube पर Dravid Bharat Channel को Subcribe करें और दबायें।

है अमावस्या की काली रात् जोकि उनके उल्लू के लिए भी उपयुक्त है लेकिन ये लक्ष्मी (धन) के लिहाज से जिस रात अंधेरा बनाए रखने की आवश्यकता होती है उसी रात हिन्दू लोग खूब रोशनी कर देते है । अब आप स्वयं समझ सकते है कि जब उल्लू रोशनी में आएगा ही नहीं, तो लक्ष्मीजी कैसे आ सकती हैं ?

साथ ही साथ हिन्दू लोग दूसरी गलती भी करने नहीं चूकते। बल्कि उसे और अधिक कर जाने में ही अपनी शान समझते हैं। वह है आतिशबाजी। पक्षी कोई भी हो पटाखें की आवाज सुनते ही फुर्र हो लेता है। तो लगातार होने वाली भयंकर आतिशबाजी के बीच आने की उम्मीद एक उल्लू से की जाए तो यह अव्वल दर्जे की मूर्खता से कम नहीं है।

वैसे तो हिन्दू मत के अनुसार कहा जाता है कि राम, सीता और लक्ष्मण चौदह वर्ष वनवास की सजा काटकर जब अयोध्या वापस आए तो उनके आने की खुशी में अयोध्या नगरवासियों ने अयोध्या को दीपों से सजाया तभी से दीवाली की शुरुआत हुई। लेकिन यह कहानी उन्हीं के ग्रन्थों के अनुसार फिट नहीं बैठती। ऊपर से इन हिन्दुओं के उलटे–पुलटे क्रिया–कलाप उसे और भी आधारहीन बना देते हैं। यदि यह मान भी लिया जाए कि दीवाली अयोध्या से ही शुरु हुई तो उस दिन राम, पूरे चौदह वर्ष जंगल में बिताने के बाद अपने घर आए थे तो अयोध्यावासियों ने राम की पूजा –अर्चना की होगी और आज भी राम की ही पूजा–अर्चना होनी चाहिए थी लेकिन ऐसा नहीं है। यहाँ तो उल्टे गणेश और लक्ष्मी की पूजा होती है। अयोध्यावासियों ने राम के आगमन पर अपने घर अथवा नगर के मुख्य द्वारों पर शुभ–आगमन या शुभ रामागमन लिखा होगा, वही लिखना भी चाहिए किन्तु यह शुभ लाभ लिखने का प्रचलन क्यो है समझ में नहीं आता। आखिर इन सब उलट–पुलट बातों के पीछे का रहस्य क्या हैं ?

अधिक से अधिक धन प्राप्त करने की चाहत में व्यापार के माध्यम से लोगों को ठगने तक की बात तो समझ में आती है लेकिन एक त्योहार के अवसर पर अधिक धन पाने के लिए जुए जैसा निकृष्ट कार्यक्रम भी चलता है। यह कुछ अजीब सा लगता है। इसी चक्कर में रातों–रात लाखों–करोड़ों का वारा–न्यारा हो जाता है। कोई–कोई लक्ष्मी को हासिल कर पाता है किन्तु अधिकतर तो अपने पास की लक्ष्मी को भी गंवा बैठते हैं। त्योहार तो दोनो का है, शुभ–लाभ अथवा शुभ दीपावली दोनों के लिए है लेकिन क्या मे सब कुछ जुए हार जाने वाले के लिए दीपावली शुभ कही जाएगी ? बात कुछ समझ से बाहर लगती है। वैसै तो किसी के आगमन को लेकर शुभ–अशुभ की बात आती है या इच्छा पूर्ति होने पर या फिर कुछ प्राप्त होने पर शुभ–अशुभ की बात आती है किन्तु यहा किसे शुभ माना जाए ? क्या है शुभ का मूल कारण? सही मायने में देखा जाए तो दीपावली के मूल में लक्ष्मी (धन) का आगमन ही शुभ माना जाता है। क्योंकि लक्ष्मी की पूजा करने का तात्पर्य ही यही हुआ कि लोग लक्ष्मी से धन की कामना करते हैं। जाहिर सी बात है, कामना की पूर्ति ही शुभ हो सकती है। जुआ खेलने का उद्देश्य भी लक्ष्मी अर्जन से ही है किन्तु सोचने की बात यह है कि हिन्दू धर्म एक त्योहार के अवसर पर धन कमाने का विकल्प जुआ बताता है दूसरा कोई अच्छा साधन नहीं। इन्हें भगवान बुद्ध के आष्टांगिक मार्ग से सीख लेनी चाहिए। सम्यक आजीविका कैसे कमाई जाए यह भगवान बुद्ध ने बड़े ही सरल और स्पष्ट ढंग से बताया है। लक्ष्मी पूजने वालों के घरों में जब लक्ष्मी यानी बेटी का जन्म होता है तो इनका चेहरा लटक जाता है। जैसे पूरे परिवार के लिए अशुभ हो जाता है । पूरे परिवार में मातम छा जाता है। जबकि इन्हें तो खुश होना चाहिए कि इनकी आराध्य देवी स्वयं उनके घर मे प्रकट हुई है लेकिन खुशी के स्थान पर दुख क्यों होता है? एक दिन वह लक्ष्मी भी तो किसी न किसी की पत्नी बनेगी। फिर स्वयं लक्ष्मी की पूजा करने वालों को जन्म देगी । एक बेटी ही तो है जो आपकी परम्परा को आगे ले चलने में सबसे अधिक सहायक होती है। इसलिए यह बेटी स्वयं पूजने के योग्य होती है किन्तु बेटी पैदा होते ही शुभ लाभ लिखने वाले लोग अशुभ–हानि का अनुभव करते हैं।

दीपावली के दिन लक्ष्मी (धन) की कामना करने वाले ही लक्ष्मी की पूजा करते हैं। सभी लागों को लक्ष्मी मिले न मिले किन्तु व्यापारियों के यहाँ लक्ष्मी तो आ ही जाती है। जिसके पास धन रूपी लक्ष्मी आ जाती है वह तो प्रसन्न हो ही जाता है लेकिन मजे की बात यह है कि जिसके पास लक्ष्मी रूपी धन नहीं आता वह भी प्रसन्न होने का दिखावा करता है या यूं कहें कि उसे भी प्रसन्न होना ही पड़ता है। वह यह मानकर प्रसन्न होता है कि उसके धर में भले ही धन नहीं आया किन्तु रात में धन की देवी लक्ष्मी जरूर आई होगी । जिससे वह घर धन्य हो गया होगा और उसी रात से घर में सम्पन्नता का वास मान लेते हैं। इसलिए गांव व देहात में दीपावली की रात के पश्चात भोर के अन्धेरे में ही महिलाएं सूप पीट–पीट कर घर के दरिद्र को बाहर निकालती है। उनकी मान्यता होती है कि घर मे लक्ष्मी का वास हो गया तो दरिद्र का क्या काम ? इसलिए हे दरिद्र तुम घर से बाहर भाग जाओ। इसके लिए जैसे किसी भड़कीली चिड़िया को आवाज से डरा कर बाहर भगाने का प्रयास किया जाए, ठीक ऐसे ही महिलाएं बिना कुछ सोचे समझे यह बचकानी हरकत करती हैं। इन महिलाओं को ये नहीं पता कि दरिद्र घर में कोई जानवर या पक्षी बनकर थोड़े ही बैठा हुआ है जो इस प्रकार सूप पीटने से भागेगा। दूसरी बात, ऐसा ही हर साल किया जाता है। दीपावली की रात घर में देवी लक्ष्मी आ जाती है और सुबह दरिद्र को निकाल कर भगा दिया जाता है तो क्या एक साल के अन्दर ही यह लक्ष्मी दरिद्र बन जाती है? ऐसा नहीं तो यह दरिद्र हर वर्ष में आ कैसे जाता है फिर वह भागता है कि नहीं इसका पता तो लगाया ही नहीं जाता। क्या वास्तव में घर में कोई दरिद्र भी निवास करता है? इन सूप पीटने वाली महिलाओं ने क्या कभी सोचा है कि ये दरिद्र क्या है? और कैसे भाग सकता है? हमें जानना चाहिए कि यह दरिद्र हमारे घर में नहीं बल्कि हमारे अन्दर ही रहता है, घर में रहने वाले परिवार में रहता है यह उनकी अज्ञानता कुसंस्कार और दुराचरण से उत्पन्न होता है हमारे गलत तरीके का रहन–सहन, विचार, आलस्य कुसंगति, अकर्मण्यता, आमदनी से अधिक खर्च और सजगता के प्रति लापरवाही। यही सारे तत्व हैं, जिनसे दरिद्र पैदा होता है और पलता भी है। बिना इन बुराइयों को अपने अन्दर से निकाले कभी घर से दरिद्र को नहीं भगाया जा सकता। चाहे एक नहीं एक ही दिन मे बीस सूप बजा–बजाकर क्यों न तोड़ डाले जाएं।

गरीब घर की महिलाएं जो अपने घर में दरिद्रता का अनुभव करती है, अवनति का अनुभव करती हैं। किन्तु अशिक्षा और धर्मान्धता के कारण दरिद्र के असली स्वरूप को नहीं जान पातीं और प्रत्येक वर्ष घर की दरिद्रता को भगाने के लिए अंधेरे में सूप पीट–पीटकर थक जाती है किन्तु उनकी दरिद्रता कभी जाती ही नहीं।

क्या इस लक्ष्मी पूजन, जुआ खेलने और सूप पीटने से देश की आर्थिक स्थिति मे कोई सुधार हुआ ? नहीं। दीपावली के लक्ष्मी पूजन से यदि किसी की आर्थिक स्थिति में सुधार होता है तो मात्र वैश्यों का और उन्हीं के लिए यह दीवाली शुभ है, उन्हीं को होने वाला लाभ–शुभ है, शेष लोगों की जेब तो खाली ही हो जाती है।

वास्तव में दीपावली के नाम पर राम नाम की एक पहेली जोड़ दी गई है जो कि एक काल्पनिक सोच है। जबकि राम का दीवाली के साथ कोई सम्बन्ध नहीं है। वेदों तथा हिन्दू ग्रंथों के प्रसिद्ध विद्वान सुरेन्द्र अज्ञात जी दीवाली के बारे में लिखते हैं। कि वाल्मीकि रामायण में राम के अयोध्या लौटने का जो वर्णन किया गया है उसमें एक बार भी 'दीप' शब्द का प्रयोग नहीं हुआ है। वहाँ लिखा हुआ मिलता है कि राम दिनके समय अयोध्या आये थे। उनके स्वागत में अयोध्यावासियों द्वारा सड़को पर सुगन्धित द्रव्य बिखेरे गए, फूलों की वर्षा की गई। सर्वत्र चहल–पहल का माहौल था। (देखें वाल्मीकि रामायण, युद्ध काण्ड, सर्ग 127) दूसरे सम्पूर्ण रामायण में भी राम के स्वागत में रात्रि को आयोजित किये गये किसी भी समारोह का कोई भी जिक्र तक उपलब्ध नहीं होता। इससे स्पष्ट हो जाता है कि राम का दीवाली से कोई सम्बन्ध नहीं है। एक दूसरी बात और भी देखते हैं कि राम अयोध्या कब वापस आये आर्थात् किस महीने में। भारतीय गणना के अनुसार दीवाली कार्तिक मास की अमावस्या के दिन होती है परन्तु वाल्मीकी रामायण और पद्म पुराण आदि ग्रंथों के अनुसार गणना करने पर राम के अयोध्या में आने का समय फाल्गुन व चैत्र मास सिद्ध होता है। न कि कार्तिक में (देखे, पंडित हरिशंकर कृत 'त्योहार पद्धति') ऐसे मे दीवाली का राम से दूर का भी सम्बन्ध नहीं रह जाता। यदि राम के द्वारा दीवाली की शुरुआत नहीं हुई तो फिर दीवाली की शुरुआत कैसे हुई? यह प्रश्न सबसे महत्वपूर्ण है। इस प्रश्न का उत्तर 'गृहसूत्र' नाम के प्राचीन ग्रंथ में मिलता है। किन्तु इसमें दीपावली नाम का कोई पर्व नहीं मिलाता। इसके स्थान पर कार्तिक महीने की अमावस्या के दिन 'नवान्नेष्टि' नाम के यज्ञ करने–कराने के प्रचलन का पता चलता है।

बात स्पष्ट और निर्विवाद है कि दीवाली का व्यापार और धन के साथ सीधा सम्बन्ध है। दंपति चतुर्थी नामक एक पुराने ग्रंथ में दीवाली को 'वैश्य जाति का त्योहार' बताया गया है। अभी तक परम्परागत व्यापारी इसी दिन से अपना वित्तीय वर्ष शुरु करते हैं। इस दिन राम की पूजा नहीं की जाती । इसके विपरीत धन की देवी लक्ष्मी का पूजन किया जाता है और साथ में गणेश की भी पूजा की जाती हैं। दीपावली को लक्ष्मी व गणेश की पूजा के सम्बन्ध में प्रसिद्ध विद्वान बी.आर. सांपला जी अपनी 'दशहरा' नामक पुस्तक में कहते हैं कि ''इसका भी एक मात्र कारण लक्ष्मी और गणेश के रूप में यूनानी शासक (यवन) चन्द्रगुप्त, उसका राजमुकुट और उसकी पत्नी कुमार देवी की पूजा है।'' 'सुरेन्द्र बनारसी' जी लिखते है कि 10वीं शताब्दी ई. में गणेश को हिन्दुओ के एक प्रमुख देवता के रूप में लाया गया और यह सभी हिन्दू देवताओं में श्रेष्ठ माना गया तथा हिन्दू धर्म की संस्कृति के प्रत्येक कार्यक्रम में प्रतिष्ठित किया गया। चन्द्रगुप्त की पत्नी कुमार देवी को लक्ष्मी के रूप में प्रतिष्ठित किया गया। संस्कार, शादी विवाह, पूजा–पाठ, व्रत–त्योहार सब इसी की उपस्थिति में सम्पन्न होते है। साहित्य के माध्यम से भी सभी जानते है कि गणेश, शंकर–पार्वती का पुत्र नहीं बल्कि केवल पार्वती का पुत्र है। जिसकी गर्दन शंकर ने अलग कर दी थी और फिर हाथी का सिर लाकर उसकी गर्दन पर जोड़ दिया गया ।

Youtube पर Dravid Bharat Channel को Subcribe करें और दबायें।

हिन्दुओं के लिए दीपावली मात्र लक्ष्मी और गणेश, जैसा कि ऊपर बताया गया है, कि पूजा मात्र है। यही हिन्दुओं की पहेली है। किन्तु दीपावली का दूसरा पहलू प्रकाश अथवा ज्ञान से है। कुछ बौद्ध विचारकों का मानना है जब सिद्धार्थ बुद्ध हो गये और लोगों को ज्ञान बांटने लगे तो लाखें की संख्या में लोग उनके धम्म में दीक्षित होने लगे और यह समाचार जब शुद्धोदन को मिला तो शुद्धोदन ने दर्शन पाने के लिए बुद्ध को बुलावा भेजा और बुद्ध ने वर्षावास के पश्चात आगमन की स्वीकृति दी। वर्षावास के पश्चात जब राजगृह से चले और उनके आने का समाचार जब शुद्धोदन को मिला तो उन्होंने भगवान बुद्ध की अगवानी में दीपों के प्रकाश से अपने नगर को सजाया तभी से दीवाली शुरु हुई ।

इस सम्बन्ध में इतना ही कहा जा सकता है कि हो सकता है कि बुद्ध के कपिलवस्तु आने के अवसर पर उत्सव की तरह मनाई गई खुशी के स्मरण में कई सालों तक वैसा ही जश्न मनाया हो किन्तु इसे त्योहार के रूप में विशाल भारत के सभी वर्ण के लोगों द्वारा स्वीकार करना मुश्किल लगता है। क्योंकि जो उच्चवर्णी लोग हरपल भगवान बुद्ध की जड़ ही काटने पर लगे रहते हैं वे लोग, बुद्ध के कपिलवस्तु आने की खुशी में अपने घर में दीपोत्सव क्यों मनाएंगे ?

भगवान बुद्ध के जीवन से जुड़ी उपरोक्त घटना ने कपिलवस्तु के शाक्यो के लिए एक यादगार दिवस का स्वरूप धारण अवश्य कर लिया होगा किन्तु यह घटना एक त्योहार के रूप में स्थाई रूप में स्थापित नहीं हो सकी। लेकिन यह तो निश्चित हो ही चुकी है कि दीवाली का सम्बंध राम से नहीं है।

बाबासाहेब के अनुसार – ''दीवाली का त्योहार लक्ष्मी पूजन का त्योहार है। 22 प्रतिज्ञाओं के पालकों का लक्ष्मी से कोई लेना देना नहीं है। वर्तमान में मनाए जाने वाला दीवाली का त्योहार बौद्धों का त्योहार कैसे हो सकता है ? इसे अपनाने के लिए हमें इसकी गहराई (मूलस्त्रोत) तक जाना होगा।''

दीपावली से सम्बंधित इस विमर्श के बाद अब हम उन तथ्यों पर विचार करेंगे, जो हमें दीपावली के मूल स्रोत तक ले जा सकते हैं। ग्रंथों की प्रमाणिकता के आधार पर यह स्वीकार करने में कोई परहेज नहीं है कि जिस दीवाली को हमारे देश के लोग इतनी धूम–धाम से मनाते हैं। उसकी शुरुआत महान बौद्ध अशोक के द्वारा की गई। इस ऐतिहासिक तथ्य की पुष्टि प्रसिद्ध चित्रकार एवं महान बौद्ध चिंतक बौद्धाचार्य शान्ति रूवरूप बौद्ध के द्वारा लिखित बौद्धचर्या–प्रकाश तथा प्रसिद्ध बौद्ध विद्यान मधुकर पिपलायन द्वारा लिखित 'महान अशोक' नामक प्रसिद्ध ग्रंथ से भी होती है। जिसका विस्तृत वर्णन हमें महान बौद्ध ग्रंथ महावंश से प्राप्त है–

सिद्धार्थ गौतम को पैंतीस वर्ष की आयु में बुद्धत्व प्राप्त हुआ और वे बुद्ध हो गए। भगवान बुद्ध बुद्धत्व लाभ होने के बाद से 45 वर्ष तक मानव कल्याण हेतु उपदेश करते रहे और उन्हें 80 वर्ष की आयु में महापरिनिर्वाण प्राप्त हुआ। उनका दिया हुआ बौद्ध धम्म 'बहुजन हिताए और बहुजन सुखाए' में सफल रहा और भगवान बुद्ध के बाद भी धम्म विकास की गति कम न हुई।

बौद्ध धम्म के प्रति सम्राट अशोक की असीम श्रद्धा थी। धम्म दीक्षा लेने के बाद उसने निश्चय किया कि संसार के सभी प्राणी सुखी रहें। इसलिए उसने प्राणी मात्र के कल्याण के उद्देश्य से ही अपना सम्पूर्ण जीवन बौद्ध धम्म की सेवा में समर्पित करने की प्रतिज्ञा की और एक दिन उसने महाथेर मोग्गलिपुत्त–तिस्स से पूछा–

'भन्ते धम्म के कितने स्कंध हैं ?

महाथेर ने समझाते हुए कहा – 'तीनों पिटकों, पाँचों निकायों और नौ अंगो में 84,000 (चौरासी हजार) धम्म स्कन्ध हैं।' अर्थात् भगवान बुद्ध ने अपने जीवन के 45 वर्षों में 84,000 उपदेशों की घूम–घूमकर मानव कल्याण हेतु देशना की है। यह सुनकर महाराज अशोक ने प्रण किया कि मैं 84,000 धम्म स्कंधों की स्मृति में उतने ही प्रतीकों का निर्माण करवाऊंगा और उनकी वंदना करुंगा ।

इसी संकल्प की स्थापना के लिए सम्राट अशोक ने अपने पूरे साम्राज्य के विभिन्न नगरों में, भगवान बुद्ध के जीवन से सम्बन्धित प्रत्येक स्थान पर स्तूप, शिलालेख, धम्म स्तम्भ और संघारामों का निर्माण करवाया। जब निश्चित समयावधि में इन धम्म स्कंधों (स्मारकों) के बनकर तैयार हो जाने का समाचार सम्राट अशोक को पाटलिपुत्र में प्राप्त हुआ तो उन्होंने चौरासी हजार चैत्य, स्तूपों, विहारों, स्तम्भों शिलालेखों आदि का उद्घाटनोत्सव कार्तिक मास के अमावस्या वाले दिन अपनी राजधानी पाटलिपुत्र से ही किया था। इस मंगल अवसर पर पूरे देश भर में दीपमालाएं प्रज्ज्वलित कर तथा पुष्प मालाएं सुसज्जित कर हर्षोल्लास और धमू–धाम के साथ दीपदान महोत्सव मनाया गया । इसी ऐतिहासिक घटना के पश्चात बौद्ध धर्मावलम्बियों द्वारा दीपदानोत्सव यानी दीपावली का त्योहार बहुत हर्षोल्लास और उत्साह के साथ मनाया जाने लगा ।

अनागरिक धम्मपाल के अनुसार सम्राट अशोक ने ई. पू. 267 से 265 के बीच कुल 16 करोड़ स्वर्ण मुद्राएं खर्च करके जो 84 हजार चैत्य और उतने ही विहार बनवायें थे, उन्हें ई.पू. 265 में विशाल धम्म महोत्सव का आयोजन कर जनता से बौद्ध धम्म पालन की प्रतिज्ञा लेकर धम्म की सेवा में दान कर दिए थे। बौद्धकालीन इतिहास काल में प्रतिवर्ष यह दिन राष्ट्रीय त्योहार के रूप में मनाया जाता था। इस दिन राष्ट्रीय अवकाश रहता था। सम्राट सेना का अवलोकन करता था और सेना उसे सलामी देती थी। सम्राट जरूरतमंदों, दुखी–पीड़ित जनता और बौद्ध भिक्खुओं को मुक्त हस्त से दान देता था। यह परम्परा सभी बौद्ध सम्राटों ने अक्षुण्ण बनाए रखी थी।

दीपावली अमावस्या को ही क्यों

यहाँ पर स्वतः एक प्रश्न उभर कर समाने आता है कि जब भगवान बुद्ध के जीवन में सभी कार्य पूर्णिमा को हुए और बौद्धों के लिए पूर्णिमाओं का अहुत महत्व है तो फिर सम्राट अशोक ने उन चौरासी हजार बौद्ध स्मारकों का उद्घाटन अमावस्या को ही क्यों किया ? इस महत्वपूर्ण प्रश्न का उत्तर भी एक महत्वपूर्ण एवं दुखद ऐतिहासिक घटना से सम्बंध रखता है। वह कार्तिक अमावस्या का ही दिन था जिस दिन भगवान बुद्ध के प्रिय और महान शिष्य ही नहीं बल्कि भगवान का बायां हाथ कहे जाने वाले वरिष्ठ भिक्खु महामोग्गल्लान की षडयंत्रपूर्ण हत्या कर दी गई थी। उन दिनों चारों ओर भगवान के धम्म का प्रभाव बड़ी ही तीव्र गति से बढ़ने लगा था और लोग अन्धश्रद्धा को छोड़कर बुद्धिवादी मार्ग अपनाने लगे थे। इससे ब्रह्मणों का वर्चस्व खतरे में पड़ गया, उनकी आवभगत में कमी आने लगी और उनका मान सम्मान कम होने लगा। इसलिए उन्होने ईर्ष्या वश तरह–तरह से भगवान बुद्ध का विरोध करने, बदनाम करनेऔर धम्म को खत्म करने का षड़यंत्र करना शुरू कर दिया। इसी विरोध की एक कड़ी में बुद्ध के विरोधियों ने तैर्थिकों के साथ मिलकर भिक्खुसंघ के धम्म–सेनापति पूज्य भिक्खु महामोग्गललान महाथेर को लाठी डण्डों से पीट–पीट कर मार डाला। अपने इस षडयंत्र की सफलता के कारण ब्राह्मणों ने खूब खुशी मनाई किन्तु बौद्ध और मूलनिवासियों में मातम छा गया। अमावस्या की यह काली रात बौद्धों के मातम (शोक) का प्रतीक बन गई थी।

एक बौद्ध सम्राट होने के नाते बौद्ध संघ के साथ ब्रह्मणों द्वारा किए गए इस अन्याय और क्रूरता का अनुभव सम्राट को अच्छी तरह हो चुका था। मुझे लगता है कि महामोगल्लान की मृत्यु का उन्हें उतना दुख नहीं था जितना कि दुख, मोगल्लान महाथेर की मृत्यु पर खुशी मनाते हुए ब्राह्मणों को देखकर होता रहा होगा । इसलिए सम्राट अशोक ने मोग्गल्लान महाथेर की मृत्यु के दुख को कम करने के लिए तथा ब्राह्मणों की खुशी को मुंहतोड़ जवाब देने और अपने सम्पूर्ण राज्य में भगवान बुद्ध के धम्म को स्थापित करने के उद्देश्य से ही सम्राट अशोक ने अपने द्वारा बनावाए गए 84000, धम्म स्मारकों का उद्घाटन कार्तिक अमावस्या की काली रात में असंख्य दीप जलाकर किया। यह उद्घाटनोत्सव पाटलिपुत्र में किया गया था। इसलिए यह धम्म के प्रकाश का प्रतीक उत्सव भी है।

पूज्य भन्ते महामोग्गल्लान और सारिपुत्र की अस्थियाँ सम्राट अशोक ने सांची के ऐतिहासिक स्तूपों में सुरक्षित रखी थीं। दीपावली नवम्बर माह में आती है, इसलिए प्रतिवर्ष नवम्बर माह के अंतिम रविवार को सांची स्थित (बुद्ध) स्तूप में यह अस्थियाँ दर्शनार्थ रखी जाती है। इस अवसर पर वहाँ विशाल मेला लगता है। सास्कृतिक–धार्मिक कार्यक्रम प्रस्तुत किये जाते हैं। देश–विदेश के लोखों बौद्ध भिक्खु व उपासक गण वहाँ पहुँचते हैं। बौद्धों को सांची जाकर उन महापुरुषों की अस्थियों के दर्शन अवश्य करने चाहिएं। उनके धम्म को समर्पित जीवन से प्रेरणा लेनी चाहिए और अपने इन्हीं ऐतिहासिक तथ्यों के आधार पर ही दीपावली मनानी चाहिए ।

इस दिन हमें अपनी क्षमता के अनुसार दिये, मोमबत्तियाँ जलाकर तथा प्रकार के आधुनिक साधनों से अपने घरों तथा धम्मस्थलों पर खूब प्रकाश करना चाहिए। गृह प्रवेश, मूर्ति स्थापना तथा उद्घाटन का कोई भी शुभ कार्य हमें इसी दिन सम्पन्न करना चाहिए । ध्यान रहे कि बौद्धों को अपने सभी कार्य दिन में ही सम्पन्न कर लेने चाहिएं केवल दीप जलाने का कार्य रात को होना चाहिये क्योंकि रात में हिन्दूवादी व्यवस्था के तहत बड़ी मात्रा में गोले–पठाखें छोड़े जाते है जिससे धम्म प्रवचन सुनने–सुनाने में व्यवधान हो सकता है। इसके अतिरिक्त बौद्धों के द्वारा मनाया जाने वाना यह त्योहार हिन्दुओं से बिलकुल अलग दिखना चाहिए। इसके लिए बौद्धों को अपनी तैयारियाँ दूर से ही दिखने लायक साज–सज्जा बौद्ध परंपरा के अनुरूप होना आवश्यक है। उपयुक्त सुझाव यह है कि अधिक से अधिक पंचशील झण्डे और झंडियों का उपयोग अपने घर तथा उत्सव स्थल को सजाने के लिए करना चाहिए। जिस प्रकार हिन्दू लोग लक्ष्मी और गणेश की पूजा करते हैं। उसी तरह प्रत्येक बौद्ध के घर में भगवान बुद्ध बाबासाहेब और सम्राट अशोक की प्रतिमायें अथवा तस्वीरें सजानी चाहिए और विधिपूर्वक वन्दना करनी चाहिए, पुष्प अर्पित करने चाहिए तथा भगवान बुद्ध, बाबासाहेब और सम्राट अशोक के द्वारा दिए गए धम्म की सम्यक ज्योति से मानव जीवन के दुखद अन्धकार को खत्म करने का संकल्प व प्रयत्न करना चाहिए ।

साभार – त्योहारो के रहस्य
रोशन बौद्ध
पृष्ठ सं. 69 से 80 तक

Youtube पर Dravid Bharat Channel को Subcribe करें और दबायें।

छठी पहेली – वेदों की विषय सामग्री : क्या वे कोई नैतिक अथवा आध्यात्मिक मूल्य रखते हैं?

I

यदि वेदों को अनिवार्य और उनके संशयरहित होने को स्वीकार कर भी लिया जाए तो उसके उपदेशों में नैतिक और आध्यात्मिक मूल्य होने चाहिए। केवल इसलिए कि जैमिनि ने सही बताया है, हम कचरे को अनिवार्य और दोष–रहित नहीं मान सकते। वेदों में कोई नैतिक अथवा आध्यात्मिक सामग्री है भी या नही। प्रत्येक हिन्दू जो वेद को संशयरहित मानता है इस प्रश्न पर विचार करने को बाध्य हैं।

आधुनिक लेखकों के विचार इस बात को स्वीकार नहीं करते कि वेदों का कोई आध्यात्मिक मूल्य है। इस विश्लेषण के लिए हम प्रो. म्यूर के विचारों का संदर्भ ले सकते हैं। प्रो. म्यूर के अनुसारः

''इस पूरी रचना का स्वरूप और इनसे प्राप्त प्रमाणों के अनुसार जिन परिस्थितियों में ये रचे गए, उनसे पता चलता है कि प्राचीन कवियों द्वारा गाई गई ये रचना उन व्यक्तियों की व्यक्तिगत अभिलाषाओं और भावनाओं का सहज वर्णन मात्र है जिन्हें उनके समक्ष दुहराया गया था। इन गीतों में आर्य ऋषियों ने अपने पैतृक देवताओं को तरह–तरह की बलियां चढ़ाकर उनकी स्तुति की और उन्हें संतुष्ट होने का आह्वन किया और उनसे ऐसे अनेक वरदान मांगे जिनकी मानव–मात्र को लालसा होती है, जैसे स्वास्थ्य, सम्पदा, चिरायु, पशुधन, संतति, शत्रु पर विजय, पाप–मुक्ति और शायद स्वर्ग–सुख भी।''

निःसंदेह यह आपत्ति की जा सकती है कि सभी विदेशी विद्वान पूर्वाग्रह ग्रस्त हैं, इसलिए उनके मत स्वीकार नहीं किये जा सकते। हम पूर्णतः विदेशियों का सहारा नहीं लेते। इस देश में भी उनके समान विचारधारा वाले विद्वान उपलब्ध हैं। इनमें सबसे सशक्त उदाहरण चार्वाक का है।

चार्वाक ने वेदों के विरूद्ध जो तर्क दिए हैं, उन तर्कों का खंडन किया गया है। प्राचीन साहित्य में चार्वाकों का उल्लेख उनकी भर्त्सना के संदर्भ में किया गया है :

''यदि आपको इस पर आपति है कि यदि परलोक में सुख जैसा कुछ नहीं है तो बुद्धिमान अग्निहोत्र क्यों करे? बलि क्यों दे? जिन पर भारी अपव्यय होता है और थकान होती है, आपकी आपत्ति को कोई भिन्न साक्ष्य नहीं माना जा सकता, क्योंकि अग्निहोत्रादि जीविकोपार्जन के साधन मात्र है, क्योंकि वेद में तीन दोष हैं अर्थात् मिथ्याकथन, अन्तर्विरोध और पुनरूक्ति। फिर ढोंगी लोग जो स्वयं को वैदिक पंडित बताते हैं, बहुत ही शरारती हैं। क्यांकि ज्ञान–मार्गियों की जड़ खोदने कर्मकांडी आ धमकते हैं और कर्मकांडियों के विरोधी ज्ञानमार्गी, कर्मकांड की धज्जियां उड़ाने से नहीं चूकते हैं और अंत में तीनों वेद असंबद्ध चारणों का गेय काव्य है। जो पोंगापंथियों के वाक् चातुर्य के कारण आज तक विद्यमान हैं, और इसी कारण यह लोक धारणा प्रचलित हैः

''अग्निहोत्र, तीनों वेद, तापसवृत्ति, तीन पद और भस्म रमाकर कुरूप होना, ये उनकी कमाई के धंधे हैं'', और बृहस्पति के कथनानुसार ''मनुष्यता और बुद्धि से कोई सरोकार नहीं है।''

बृहस्पति भी इसी मत के अनुयायी थे। चार्वाक की अपेक्षा बृहस्पति वेदों के विरूद्ध अधिक कठोर एवं उग्र थे। जैसा कि माधवाचार्य ने उद्धत किया है। बृहस्पति का तर्क हैः

''स्वर्ग की कोई सत्ता नहीं है, मोक्ष कुछ नहीं है। न पुनर्जन्म होता है। न चार जातियों का कोई कर्म आदि प्रभाव डालते हैं। अग्निहोत्र, तीनों वेद, तापस–वृत्ति तीन–पद भस्म रमाकर कुरूप होना... उनकी कमाई के धंधे हैं जिनमें बुद्धि और मनुष्यता का भाव नहीं है, ज्योतिस्तोम संस्कार में यदि कोई जीव काट दिया जाता है और यदि वह सीधे स्वर्गगामी होता है तो बलिदाता अपने पिता की बलि क्यों नहीं दे देता?

यदि श्राद्ध से मृतक संतुष्ट होते हैं तो इहलोक में भी जब कोई यात्रा आरंभ करता है तो यात्रा के प्रबंध करना व्यर्थ है?

यदि श्राद्ध से परलोक में संतुष्टि होती है तो इहलोक में उन्हें भोजन क्यों नहीं दिया जाता? जो स्वर्ग से विमान आने की प्रतीक्षा में बैठे हैं।

(जब तक जीवन है तो सुख से क्यों न रहें? क्यों न ऋण लेकर भी घी पिए?)

यदि मरणोपरांत देह भस्म बन जाती है तो वापस कैसे आ सकती है?

देह त्याग के पश्चात कोई यदि परलोक चला जाता है तो वह अपने परिजन के मोह में फंसकर लौट क्यों नहीं आता?

इस प्रकार यह सब कमाई के धंधे हैं जो ब्राह्मणों ने बना रखे हैं।

यह सभी संस्कार मृतकों के लिए हैं, अन्यत्र कोई फल नहीं मिलता, तीन वेदों के सृष्टा विदूषक, लालबुझक्कड़ और दुरात्मा हैं।

पंडितों, झारपड़ी, तुरपड़ी से सर्वविदित सूत्र और देवी के लिए परोक्ष पूजा सभी अश्वमेध की प्रशंसा में हैं।

इनका अन्वेषण लालबुझक्कडों ने किया और इसी कारण पुरोहितों को विभिन्न प्रकार से चढ़ावा दिया जाता है।

जबकि इसी प्रकार निशाचरों ने मांस भक्षण की प्रशंसा की है।''

यदि चार्वाक और बृहस्पति के मत अमान्य हैं तो अन्य अनेक साक्ष्य विद्यमान हैं। यह साक्ष्य न्यायवैशेषिक, पूर्व और उत्तर मीमांसा दर्शनशास्त्रों पर इकतरफा पाठ्यपुस्तकें लिखी हैं। उन्होंने वेदों की प्रामाणिकता का औचित्य बताने से पूर्व इस बात का पूरा षडयंत्र रचा है कि वेदों की सत्ता को चुनौती देने वाले उनके विरोधियों का मत उनकी पाठ्यपुस्तकों के पास भी न फटक सके। इस तथ्य से हम दो बातें प्रामाणित कर सकते हैं : (1) कि एक ऐसी विचारधारा थी जो वेदों को प्रामाणिक ग्रंथ स्वीकार करने के विरूद्ध थी, (2) कि वे सम्मानित विद्वान थे जिनके मत को वेदों की सत्ता स्वीकार करने वाले भी मानने को बाध्य थे। मैं न्याय और पूर्व मीमांसा में विमत को उद्धत करता हूं।

न्यायदर्शन के प्रणेता गौतम वेदों की प्रामाणिकता के पक्षधर थे। उन्होंने सूत्र 57 में अपने विरोधियों के तर्क का सारांश दिया है जो निम्नांकित है :

'वेद प्रमाण नहीं है क्योंकि इनमें ''मिथ्यावाद, आत्मविरोध और पुनरूक्ति दोष है। मौखिक साक्ष्य जो प्रत्यक्ष साक्ष्यों से भिन्न है कि वैद प्रमाण नहीं हैं, क्यों? क्योंकि उसमें मिथ्यापन आदि के दोष हैं।''

''इन दोषों के संदर्भ में मिथ्यावाद इस तथ्य से प्रमाणित है कि कई बार हम पाते हैं कि पुत्रेष्टि के लिए दी गई बलि फलदायी नहीं होती और इसी प्रकार अन्तर्विरोध प्रकट है कि पूर्व और परवर्ती घोषणाओं में भिन्नता है। इस प्रकार वेद कहता है कि ''वह तब यज्ञ करता है जब सूर्योदय से पूर्व यज्ञ करता है। वह तब यज्ञ करता है जब श्वान उसका चढ़ावा लेकर भाग जाता है और दोनों ही बलिदाता का चढ़ावा उठाकर ले जाते हैं, फिर शब्दों के बीच अन्तर्विरोध है जिनमें बलि की प्रेरणा है और उसकी निंदा भी है जिसके घातक परिणाम होते हैं। तब पुनरूक्ति के कारण वे प्रमाण नहीं हैं क्योंकि जो पहले कहा गया है उसकी तीसरी बार आवृत्ति होती है। अंत में भी पहली बात दोहराई जाती है। क्योंकि आदि, अंत के समान है और शब्दों की तीसरी आवृति है। यह वाक्य पुनरूक्ति है। क्योंकि इस वाक्य विशेष में इन उदाहरणों के अनुसार एक–सा कथन होने के कारण और यह सभी रचनाएं एक व्यक्ति की हैं इसलिए समान प्रकृति की हैं और उनमें कोई प्रामाणिकता नहीं हैं।''

जैमिनि का संदर्भ देखें। वह वेद विरोधियों के विचारों को पूर्व मीमांसा के सूत्र 28 और 32 में सार–संक्षेप में उद्धत करते हैं। सूत्र 28 कहता हैः

''यह भी आपत्ति की गई है कि वेद सनातन नहीं हो सकते, क्योंकि हम पाते हैं कि उनमें ऐसे व्यक्तियों का उल्लेख है जो सनातन नहीं है बल्कि जन्म और मृत्यु के पात्र हैं। इस प्रकार वेद में कहा गया है ''बाबरा प्रवाहनी की इच्छा है, कुसरविंदा औद्दालकी की इच्छा है'' इसलिए वेद के संदर्भित वाक्यों में इन व्यक्तियों के जन्म–पूर्व उल्लेख संभव नहीं है। यह स्पष्ट है कि ये वाक्य आरंभिक हैं। इस प्रकार सनातन नहीं है। यह प्रमाणित है कि ये मानव कृतियां हैं।''

सूत्र 32 कहता हैः

''यह प्रश्न किया गया है कि वेद कर्त्तव्यों का साक्ष्य कैसे हो सकते हैं जबकि उनमें ऐसी असंगत और अनर्गल बातें भरी पड़ी हैं जैसे ''कम्बल और खड़ाऊ पहने एक बूढ़ा द्वार पर खड़ा है और आशीष के गीत गा रहा है। समर्पण को तत्पर एक ब्राह्मणी कहती है ''हे राजन बता, प्रतिपदा के दिन संभोग के क्या अर्थ हैं? अथवा यह ''गऊओं ने इस बलि पर उत्सव मनाया''।

निरूक्त के लेखक यास्क ने भी यही मत प्रकट किया है। वह कहता है :

पूर्वोक्त खंड में चार प्रकार की ऋचाएं हैं। क. जो देवता की अनुपस्थिति में संबोधित हैं ख. जिसमें उसको समक्ष जानकर संबोधन किया गया, ग. जिनमें आराधक को उपस्थित और आराध्य को अनुपस्थित माना गया है। ये अत्यधिक हैं, घ. जबकि जो स्वगत हैं ये यत्र–तत्र ही हैं। ऐसा भी हुआ है कि देवता की प्रशंसा बिना वरदान की कामना किए की गई है जैसे कि मंत्र (ऋ. वे. 1.32) ''मैं इन्द्र के शौर्य का वर्णन करता हूं'' आदि। फिर बिना स्तुति किए वरदान की कामना की गई है जैसे ''मैं अपने चक्षुओं से अच्छा देखूं, मेरा मुख कांतिमान हो और कानों से भली भांति सुनू। ऐसा अथर्ववेद (यजुर) और बलि सूत्रों में बार–बार कहा गया है। फिर इसमें हम शपथ और शाप भी पाते हैं। (ऋ.वे. 7, 104, 15) ''यदि मैं यातुधानी हूं तो आज मैं मर जाऊं'' (आदि) फिर हम पाते हैं कुछ विशिष्ट परिस्थितियों को दर्शाने वाले मंत्र (ऋ.वे. 10,29,2) सत मृत्यु नहीं थी न अमरत्व आदि कुछ स्थितियों में विलाप भी लक्षित है जैसे कि मंत्र (ऋ. वे. 10,95,14) ''रूपवान देवता लुप्त हो जाएगा और कभी नहीं लौटेगा आदि। कहीं लांछन और प्रशंसा भी है जैसा कि (ऋ.वे. 10, 117,6) ''वह व्यक्ति जो अकेला खाता, अकेला पापकर्म करता है आदि। ऐसे ही द्यूत के विषय में मंत्र हैं (ऋ. वे. 10, 34, 13) द्यूत क्रीड़ा की निंदा की गई है–और कृषि कार्य की प्रशंसा। इस प्रकार जिन उद्देश्यों से ऋचाओं की सृष्टि हुई, ये विविध प्रकार के हैं।''

यास्क के शब्दों में :

''प्रत्येक मंत्र किसी देवता के लिए रचा गया है जिससे ऋषि का उद्देश्य इच्छा पूर्ति का है, वह उसे संबोधित करता है।''

यदि यह प्रमाणित करने के लिए इतना भी पर्याप्त नहीं है कि वेदों में कोई नैतिक अथवा आध्यात्मिक मूल्य नहीं है तो अन्य साक्ष्य प्रस्तुत किए जा सकते हैं।

जहां तक नैतिकता का प्रश्न है, ऋग्वेद में प्रायः कुछ है ही नहीं, न ऋग्वेद नैतिकता का ही आदर्श प्रस्तुत करता है। इस संबंध में तीन उदाहरण प्रस्तुत किए जा सकते हैं।

पहला यम–यमी संवाद है जो भाई–बहन थे।

''(यमी कहती है)

मैं अपने मित्र (यम) को मित्रता के लिए निमंत्रित करती हूं। विशाल रेगिस्तान और महासागरों को पार करती हुई आई हूं इस निर्जन भूमि पर (तुम्हारी) संतान जन्म दें, जो तुम्हारे जैसे पिता के महान गुणों से सम्पन्न हों।''

यह कहता है–''तुम्हारा मित्र ऐसी मित्रता की इच्छा नहीं रखता। एक ही मूल की होती हुए भी तुम्हारी प्रकृति दूसरे प्रकार की है। महान प्रजापति के बहादुर पुत्रों का स्वर्ग पर अधिकार है और वे हमें देख रहे हैं।''

यही कहती है–''अमरत्व प्राप्त देवादि सहवास का सुख प्राप्त करते हैं जो मृत्यु लोक के लोगों के लिए मना है। आप मुझसे सहवास करें कि जिस प्रकार सबका निर्माता (ब्रह्मा) अपनी पुत्री का पति बना।''

यम कहता है–''हमने वह कर्म नहीं किया जो पहले किया गया है। हम सत्यवादी हैं अतः असत्य भाषण कैसे कर सकते हैं। गंधर्व (सूर्य) अंतरिक्ष जल धारण करने वाला और उसकी वधू हम दोनों के पिता माता है, अतः हम सगे (भाई बहन) है।

यमी कहती है–''परमपिता प्रजापति ने हमें गर्भ में ही पति–पत्नी बना दिया। उसके कार्य में कोई बाधक नहीं। पृथ्वी और आकाश भी हमारे संबंध से परिचित हैं।

यहम कहता है–''हमारे प्रथम प्रणय को कौन जानता है। किसने यहां रहस्य से परिचित कराया है। मित्र और वरूण के स्थान दिन–रात के विषय में तू क्या कहती है। नर्क की सजा कौन देता है।''

यमी कहती है–''यम की वासना मुझ यमी को एक शैया पर सोने के लिए विवश करें। मैं पत्नी के रूप में पति को अपना सब कुछ समर्पित करती हूं। एक रथ के दो पहियों की भांति हम सहयोग कर वासना की पूर्ति करें।''

यह कहता है–''ईश्वर के दूत पृथ्वी पर सदा विचरण करते हैं और अपने नेत्र खुले रखते हैं। ओ विनाशिनी शीघ्र किसी अन्य कि साथ रमण कर जैसे कि एक गाड़ी के दो पहिए मिलते हैं। और मेरा पीछा छोड़।''

Youtube पर Dravid Bharat Channel को Subcribe करें और 🔔 दबायें।

यमी कहती है–''तुम्हारे ऊपर प्रत्येक पुजारी रात्रि और दिन का न्यौछावर करें, सदैव सूर्य के नेत्र खुलें, तुम्हारे लिए युगल (रात और दिन) संयुक्त होकर आकाश और पृथ्वी की भांति मिलें। मैं यम के वियोग को सहन न कर सकूं।''

यम कहता है–''आगे चलकर ऐसा समय आयेगा जब बहने (पति के रूप में) उसे चुनेंगी तो उनके भाई नहीं होंगे। अतः भाग्यशालिनी मेरे अतिरिक्त अन्य के साथ अपनी भुजाओं को उसका तकिया बना।''

यमी कहती है–''उस भाई होने से क्या लाभ है जिसके रहते हुए भी बहिन पति विहीन रहे। उस बहिन के होने से क्या लाभ है जिसके रहते हुए भी भाई दुख उठाए। मैं कामाहत होकर ऐसे वचन बोल रही हूं। तुम मेरे शरीर से अपना शरीर भली भांति मिलाओ।'

यह कहता है–''हे यमी, मैं तुम्हारे शरीर से अपना शरीर नहीं मिलाना चाहता। जो अपनी बहिन से सम्भोग करता है उसे लोग पापी कहते हैं। हे सुंदरी! मेरे अतिरिक्त किसी अन्यु पुरूष से आमोद–प्रमोद करो। तुम्हारा भाई यह काम करना नहीं चाहता।''

यमी बोली–''मुझे खेद है कि तुम बहुत कमजोर हो। मै। तुम्हारे मन को नही समझ पा रही हूं। रस्सी जिस प्रकार घोड़े को बांधती है, और लता जिस प्रकार वृक्ष से लिपट जाती है, उसी प्रकार अन्य स्त्री तुम्हारा आलिंगन करती है।''

यम ने कहा–''हे यमी। लता जिस प्रकार वृक्ष को लपेटती है, उसी प्रकार तुम मेरे अतिरिक्त अन्य पुरूष का आलिंगन करो। तुम उस पुरूष का मन जीतने की कामना करो और वह पुरूष तुम्हारा मन जीतने की इच्छा करे। तुम उसी के साथ कल्याणकारी सहवास करो।''

''राक्षस–हंता अग्नि हमारी प्रार्थना स्वीकार करे। दुरात्मा से त्राण दें जो व्याधि के रूप में तेरे भ्रूण को आक्रांत कर सके, तो अंतः काष्ठ की भांति तेरे गर्भाशय को निरस्त करे।''

''अग्नि देव हमारी अर्चना को स्वीकार करें, नरभक्षियों को नष्ट करें जो व्याधि के रूप में तेरे गर्भाशय पर दुष्प्रभाव डालते हैं, जो अंतःकाष्ठ की भांति तेरी कोख को रिक्त कर सकते हैं।''

''दुरात्मा से हमें त्राण दे जो पुंसत्व का हरण करते हैं। गर्भ ठहरते ही उसे विस्थापित करते हैं जो नवजात शिशु का हनन करता चाहते हैं।''

''हमें दुरात्मा से त्राण मिले जो तेरी जंघा को विलग करता है जो पति–पत्नी के बीच बाधा बनता है जो तेरी कोख में प्रविष्ट होता है। बीज हरण करता है। हमें उस दुरात्मा से त्राण मिले जो भ्राता, पति अथवा इतर प्रियतम के रूप में तुझ तक पहुंचता है और गर्भपात करना चाहता है।''

''हमें दुरात्मा से त्राण मिले जो तुझे नींद या अंधेरे में छल लेता है। तुझ तक आकर गर्भपात कर देता है।''

ऋग्वेद के कुछ मंत्रों अथवा प्रार्थनाओं को लेते हैं। उनमें से कुछ इस प्रकार हैं :

1. हे वायु देव! तू कितना रूपवान है हमने मसालों से सोम रस बनाया है। आ, इसका पान कर और हमारी प्रार्थना स्वीकार कर –– ऋग्वेद I. 1.2.1
2. हे इन्द्र देव! हमारे सरंक्षण हेतु सम्पदा प्रदान कर। तेरे द्वारा प्रदत्त सम्पदा हमें सुख दे। चिरकालिक हो और शत्रु विनाश में विनाश में सहायक हो। I. 1.8.1
3. पुरूषो! जब भी करो इन्द्र और अग्निदेव की स्तुति करना न भूलना, उनका गुणगान करो और गायत्री–छंद में उनकी स्तुति करो। I.21.2
4. हे अग्निदेव! देव पत्नियों और त्वष्टा को ला, जो आने और सोमरस पान को लालायित है। I.22.9
5. हम प्रार्थना करते हैं, देव पत्नियां सभी उपलब्ध पंखों से और आनन्दित होकर हमारे पास आएं। I.22.11
6. मैं प्रार्थना कर रहा हूं कि इन्द्र, वरूण और अग्नि की पत्नियां में पास आएं और सोम पिएं।
7. हे वरूण! हम तुझ से अनुनय कर रहे हैं कि अपना क्रोध शमन कर। हे असुर! तू पूर्ण बुद्धिमान हैं, हमें पाप मुक्त कर। I.24.14
8. हमारा सोमरस स्त्रियों द्वारा तैयार किया गया है जिन्होंने इसे श्रमपूर्वक मथा है। हे इन्द्र! हम तेरी प्रार्थना करते हैं। आओ और इस सोम का पान करो। I.28.3
9. तेरे शत्रु जो तुझे कुछ अर्पित करते वे विलीन हो जाएं और जो अर्पित करते हैं, वे संपन्न हों। हे इन्द्र! हमें उत्तम गाएं और अश्व प्रदान कर और विश्व में हमारी ख्याति फैला। I.29.4
10. हे अग्नि! हमारी राक्षसों से, धूर्त–शत्रुओं से, उनसे जो हमें घृणा करते हैं, और हमारा वध करना चाहते हैं, रक्षा कर। I.36.15
11. हे इन्द्र! तू वीर है। आ और हमारे द्वारा तैयार सोम का पान कर और हमें सम्पदा देने को तत्पर रह। जो तुझे कुछ अर्पण नहीं करते, उनकी सम्पत्ति का हरण कर और उसे हमें प्रदान कर। I.81.8.8
12. हे इन्द्र! इस सोम का पान कर, जो सर्वश्रेष्ठ है, अमरता प्रदान करता है और अत्याधिक मादक है। I.84-4
13. हे आदित्य! हमारे पास आ अपना आशीर्वाद हमें दें। हमें युद्ध में विजयी बनाए। तुम समृद्ध हो। तुम दानी हो। जैसे एक रथ कठिन मार्ग पर अग्रसर होता है, उसी प्रकार हमें संकटों से पार कर। I. 106 1-1 22
14. हे मारूत!.... तुम्हारे अनुयायी तुम्हारी प्रशस्ति गा रहे हैं। प्रसन्न हो और आ सोम पान के लिए निर्मित कुश आसन पर विराजमान हो। 7 57-1-2
15. हे मित्र वरूण! हमने यज्ञ में तेरी आराधना की। इसे स्वीकार करने की कृपा कर। हमें संकटों से बचा। सातवां 7.60, 12

ऋग्वेद में उल्लिखित अनेक मंत्र समूह में से यह कुछेक हैं, किन्तु इसमें कोई संदेह नहीं कि यह छोटा सा नमूना ही उन सबके लिए पर्याप्त है।

मैं बता दूं कि मैंने ऋग्वेद और यजुर्वेद के बहुत से अश्लील अंशों को जानकर छोड़ दिया है। जिन्हें इस सबंध में जिज्ञासा, है वे ऋग्वेद के मण्डल दस 85.37 के सूर्य–पूशान संवाद और ऋग्वेद के मंडल दस 86-6 में इन्द्र–इंद्राणी संवाद देख सकते हैं। यजुर्वेद के अश्वमेध प्रसंग में और अश्लीलता व्याप्त है।

इन अश्लीलताओं को छोड़ भी दें और ऋग्वेद के प्रार्थना वर्ग तक ही सीमित रहें तो भी क्या कोई कह समता है कि यह प्रार्थनाएं नैतिक अथवा आध्यात्मिक उत्थान करने वाली हैं?

जहां तक दर्शन का प्रश्न है ऋग्वेद में वह नदारद है जैसा कि ''प्रत्येक मंत्र किसी देवता के लिए रचा गया है जिससे ऋषि का उद्देश्य इच्छापूर्ति का है और वह उसे संबोधित करता है।''

यदि यह प्रमाणित करने के लिए इतना भी पर्याप्त नहीं है कि वेदों में कोई नैतिक अथवा आध्यात्मिक मूल्य नहीं है तो अन्य साक्ष्य प्रस्तुत किए जा सकते हैं।

जहां तक दार्शनिकता का प्रश्न है ऋग्वेद में प्रायः कुछ है ही नहीं। न ऋग्वेद नैतिकता का ही आदर्श प्रस्तुत करता है। प्रोफेसर विल्सन का कहना है कि ऋग्वेद में जो वृहद्तम् है बहुत कम सैद्धांतिक अथवा दार्शनिक प्रसंग आए हैं। इसमें विभिन्न विचारधाराओं के परवर्ती अन्तर्बोध संबंधी कल्पनाओं का अभाव है। पुनर्जन्म सिद्धांत की ओर कोई संकेत नहीं है और न ही सृष्टि चक्र का कोई संदर्भ है। वेद आर्यों के सामाजिक जीवन के दिग्दर्शन का एक लाभकारी सूचना स्त्रोत है। यह आदिम जीवन की प्रतिच्छाया है, जिनमें जिज्ञासा अधिक है, भविष्य की कल्पना नहीं है। इनमें दुराचार अधिक, गुण मुट्ठी–भर हैं।

ष

अब हम अथर्ववेद पर आते हैं और इसकी विषयवस्तु की निरख–परख करते हैं। इसका उत्तम साधन अथर्ववेद की विषयसूची की तालिका प्रस्तुत करना है।

खंड I – व्याधि हरण और भेषजज्ञानी

पांचवां, 22 – तापमान (बुखार) और संबद्ध व्याधि रोधी तंत्र,
छठा, 20 – तापमान (बुखार) रोधी तंत्र,
प्रथम, 25 – तापमान (बुखार) रोधी तंत्र,
सातवां, 116 – तापमान (बुखार) रोधी तंत्र,
पांचवां, 4 – तापमान हरण हेतु कुष्ठ निवारण पौधे की प्रार्थना,
उन्नीसवां, 39 – तापमान तथा अन्य रोग हरण हेतु कुष्ठ निवारण पौधे की प्रार्थना,
प्रथम, 12 – तापमान, शिरोपीड़ा और काल से उत्पन्न प्रकाश की प्रार्थना,
प्रथम, 22 – पांडुरोग और संबद्ध व्याधि रोधी तंत्र,
छठा, 14 – हलस रोधी तंत्र,
छठा, 105 – कास रोधी तंत्र,
प्रथम, 2 – देह से अतिस्राव रोधी तंत्र,
द्वितीय, 3 – जलस्त्रोत से अतिस्राव रोधी तंत्र,
छठां, 44 – देह से अतिस्राव रोधी तंत्र,
प्रथम, 3 – मलबंध और मूल बंध रोधी तंत्र,
छठा, 90 – रूद्र, क्षेपण से उत्पन्न उदरशूल रोधी तंत्र,
प्रथम, 10 – जलोदर रोधी तंत्र,
सप्तम, 83 – जलोदर रोधी तंत्र,
छठा, 24 – जलोदर, हृदय रोग और तत्जन्य व्याधि का प्रवाहित जल द्वारा उपचार,
छठा 80 – सूर्य ने अनुनय,
द्वितीय, 8 – क्षेत्रीय वंशानुगत व्याधि रोधी तंत्र,
द्वितीय, 10 – क्षेत्रीय वंशानुगत व्याधि रोधी तंत्र,
तृतीय, 7 – ... वही ...
प्रथम, 23 – कुष्ठ रोग का काले पोधे द्वारा उपचार,
प्रथम, 24 – ... वही ...
छठा, 83 – कंठमाला उपचार तंत्र,
सातवां, 76 – (क) कंठ माला उपचार,
(ख) रसौली का उपचार,
(ग) दोपहरी में सोमप्रभाव में गाया जाने वाला गीत,
सप्तम, 74 (क) कंठमाला का उपचार,
(ख) ईर्ष्या तुष्टि तंत्र,
(ग) अग्नि देव से प्रार्थना,
छठा, 25 – ग्रीवा और कंधे की कंठमाला रोधी तंत्र,
छठा, 57 – कंठमाला उपचार के रूप में मंत्र,
चतुर्थ, 12 – अस्थि खंडन के उपचार में अरूंधति (लक्ष) बूरी का तंत्र,
पंचम् 5 – घावों के उपचार के प्रति सिल्की (लक्ष) अरूंधति से घाव का उपचार तंत्र,
छठा, 109 – घावों के उपचार हेतु काली मिर्च,
प्रथम, 17 – रक्त स्राव रोकने का तंत्र,
द्वितीय, 31 – कृमि रोधी तंत्र,
द्वितीय, 32 – पशुओं में कृमि–रोधी तंत्र,
पंचम, 23 – बालकों में कृमि–रोधी तंत्र,
चतुर्थ, 6 – विष–रोधी तंत्र,
चतुर्थ, 7 – विष–रोधी तंत्र,
छठा, 100 – विष का प्रतिरोधी चीटियां,
पंचम, 13 – सर्प–विष–रोधी तंत्र,
छठा, 12 – सर्व–विष– रोधी तंत्र,
सातवां, 56 – सरिसृप, बिच्छू और कीट विष–रोधी तंत्र,
छठा, 16 – नेत्र–शोथ–रोधी तंत्र,
छठा, 21 – केश–वृद्धि के लिए तंत्र,
छठा, 136 – केश–वृद्धि के लिए नितौनी के साथ तंत्र,
छठा, 137 – केश वृद्धि के लिए तंत्र,
चौथा, 4 – पुंसत्व–वृद्धि तंत्र,
छठा, III – उन्मादहारी तंत्र,
चौथा, 37 – अगश्रृंगी के साथ राक्षसों, अप्सराओं और गंधर्वों से मुक्ति का तंत्र,
द्वितीय, 9 – पिशाच के अधीन व्याधि, दस प्रकार के काष्ठ के तंत्र से उपचार,
चतुर्थ, 36 – व्याधि मूलक पिशाच रोधी तंत्र,
द्वितीय, 25 – पूसनीपरणी द्वारा कण्व व्याधि मूलक पिशाच रोधी–तंत्र,
छठा, 32 – पिशाच भागने वाले तंत्र,
द्वितीय, 4 – व्याधि और पिशाच रोधी गंगीदा द्वारा तैयार ताबीज तंत्र,
उन्नीसवां, 34 – व्याधि और पिशाच रोधी गंगीदा द्वारा तैयार ताबीज तंत्र,
छठा, 85 – वारण वृक्ष द्वारा बने ताबीज से रोग–हरण,
छठा, 127 – सर्व–रोग हारी किचपदद्रु,
उन्नीसवां – गुग्गल की उपचार शक्ति,
छठा, 91 – जौ और जल सर्व–रोगहारी,
आठवां, 7 – सर्व–रोगहारी बूटियों और इन्द्रजाल के मंत्र
छठा, 96 – सर्व रोगहारी जड़ी बूटियां
द्वितीय, 33 – आरोग्य तंत्र,
नवां, 8 – सर्व–रोग–रोधी तंत्र,
द्वितीय, 29 – दीर्घायु और रोग–संक्रमण द्वारा समृद्ध का तंत्र

खण्ड II दीर्घायु और स्वास्थ्य के लिए प्रार्थनाएं (आयुष्यानी)

तृतीय, 2 – स्वास्थ्य और दीर्घायु हेतु प्रार्थना,
द्वितीय, 28 – दीर्घायु हेतु प्रार्थना,
तृतीय, 31 – स्वास्थ्य और दीर्घायु हेतु प्रार्थना,
सप्तम्, 53 – दीर्घायु के लिए प्रार्थना

III पिशाचों, जादूगरों और शत्रुओं को शाप

प्रथम, 7 – जादूगरों और पिशाचों को शाप,
प्रथम, 8 – जादूगरों और पिशाचों को शाप
प्रथम, 16 – पिशाचों और जादूगरों के विरूद्ध सीसे का तंत्र,
छठा, 2 – राक्षसों के विरूद्ध सोम से अनुनय,
द्वितीय, 14 – पुरूषों, पशुओं और गृहस्थी के लिए अनिष्ठकारी पिशाचनियों के विरूद्ध तंत्र,

Youtube पर Dravid Bharat Channel को Subcribe करें और दबायें।

तृतीय, 9 – विषखंड अनिष्टकारी राक्षसों के विरूद्ध शाप,
चतुर्थ, 20 – एक गुल्म विशेष के साथ तंत्र जो राक्षस और शत्रु का नाम बताएं,
चतुर्थ 17 – अपमार्ग पौधे द्वारा जादूगर, राक्षस और शत्रु रोधी तंत्र,
चतुर्थ 18 – अपमार्ग पौधे द्वारा जादूगर, राक्षस और शत्रु रोधी तंत्र,
चतुर्थ 19 – राक्षसों और जादूगरों के विरूद्ध अपमार्ग पौधे के रहस्यात्मक गुण,
सप्तम, 65 – शाप और पाप कर्मों के फल के विरूद्ध अपमार्ग का तंत्र,
दशम, 1 – जादूगर रोधी तंत्र,
पंचम, 14 – जादूगर रोधी तंत्र,
पंचम, 31 – जादूगरी रोधी तंत्र,
अष्टम, 5 – सरंक्षण के लिए श्राक्त वृक्ष की लकड़ी से बने रक्षाकवच (ताबीज) से प्रार्थना,
दशम, 3 – वरणा वृक्ष से बने ताबीज का गुणगान,
दशम, 6 – खादिर वृक्ष की लकड़ी से बने ताबीज का गुणगान,
नवम् 16 – विश्वासघात, षड्यंत्र से रक्षा के लिए वरूण की प्रार्थना,
द्वितीय, 12 – शुभ कार्यों में विघ्नकारी शत्रु को शाप,
सप्तम, 70 – शत्रु की बलि को विफल करना
द्वितीय, 7 – एक पौधे विशेष की सहायता से शाप और अनिष्टकारी षड्यंत्र रोधी तंत्र,
तृतीय, 6 – अश्वगंधा द्रुम से शत्रु नाश,
छठा, 75 – शत्रुनाशी प्रार्थना (नैवेघम् हवि),
छठा, 37 – अनिष्टकारी तांत्रिक कार्यों के विरूद्ध तंत्र
सप्तम, 13 – शत्रु की शक्ति हरण तंत्र,

IV स्त्रीकर्मणी तंत्र

द्वितीय, 36 – पति प्राप्ति हेतु तंत्र,
छठा, 60 – पति प्राप्ति हेतु तंत्र,
छठा, 82 – पत्नी प्राप्ति हेतु तंत्र,
छठा, 78 – दम्पति को आशीर्वाद,
सप्तम, 36 – नव विवाहितों द्वारा उच्चारणीय प्रणय तंत्र,
सप्तम, 37 – दुल्हन द्वारा दूल्हे के प्रति उच्चारणीय तंत्र,
छठा, 81 – गर्भधारण हेतु गंडा (ताबीज),
तृतीय, 23 – पुत्र प्राप्ति हेतु तंत्र,
छठा, 11 – पुत्र प्राप्ति हेतु तंत्र
सप्तम, 35 – किसी स्त्री को बंध्या बनाने हेतु झाड़–फूंक,
छठा, 17 – गर्भपात रोधी तंत्र,
प्रथम, 34 – किसी स्त्री का प्रणय पाने हेतु तंत्र,
द्वितीय, 30 – किसी स्त्री का प्रणय पाने हुतु तंत्र,
छठा, 8 – किसी स्त्री का प्रणय पाने हेतु तंत्र,
छठा, 9 – किसी स्त्री का प्रणय पाने हेतु तंत्र
छठा, 102 – किसी स्त्री का प्रणय पाने हेतु तंत्र
तृतीय, 25 – किसी स्त्री का कामुक आकर्षण पाने हेतु तंत्र,
सप्तम, 38 – किसी स्त्री का प्रणय पाने हेतु तंत्र,
छठा, 130 – किसी स्त्री की वासना उद्दीप्त करने हेतु तंत्र,
चतुर्थ, 5 – गुप्त मिलन हेतु तंत्र,
छठा, 77 – आवारा स्त्री की वापसी के लिए तंत्र,
छठा, 18 – ईर्ष्या रोधी तंत्र,
प्रथम, 14 – किसी स्त्री द्वारा अपनी सपत्नी के विरूद्ध झाड़–फूंक,
तृतीय, 18 – सपत्नी के विरूद्ध तंत्र,
छठा, 138 – किसी स्त्री की कामुकता रोधी तंत्र,
प्रथम, 18 – किसी स्त्री की पिशाच वृत्ति का शमन,
छठा, 110 – दुष्ट ग्रह में जन्मे शिशु के प्रथम दो दांत उल्टे निकलने पर अनुष्ठान,

V राजकार्य संबंधी तंत्र

चतुर्थ, 8 – राज्यभिषेक पर प्रार्थना,
तृतीय, 3 – निर्वासित राज्य की पुर्नस्थापना हेतु तंत्र,
तृतीय, 4 – राजा के निर्वाचन पर प्रार्थना,
चतुर्थ, 22 – किसी राजा को श्रेष्ठता प्राप्ति हेतु तंत्र,
तृतीय, 5 – राज्य शक्ति में वृद्धि हेतु पर्ण दुम से बने ताबीज की प्रशंसा,
प्रथम, 9 – इहलोक और परलोक में सफलता हेतु प्रार्थना,
छठा, 38 – ऐश्वर्य और शक्ति हेतु प्रार्थना,
अष्टम, 8 – युद्ध तंत्र,
प्रथम, 19 – बाण घाव रोधी युद्ध तंत्र,
तृतीय, 1 – शत्रु को भ्रमित करने वाला तंत्र,
तृतीय, 2 – शत्रु को भ्रमित करने वाला तंत्र,
छठा 97 – राजा के पक्ष में युद्ध पूर्व तंत्र,
छठा, 99 – राजा के पक्ष में युद्ध पूर्व तंत्र,
ग्याहरवां, 9 – युद्ध में सहायता हेतु अर्बुदी और न्यार्बुदी प्रार्थना,
एकादश, 10 – युद्ध में सहायता हेतु त्रिशमधि प्रार्थना,
पंचम, 20 – युद्ध–नाद का मंत्र,
पंचम, 21 – युद्ध–नाद शत्रु भय मंत्र,

VI सभा में अनुकूलता प्रभाव वृद्धि हेतु तंत्र

तृतीय, 30 – अनुकूलता प्राप्ति हेतु तंत्र,
छठा, 73 – विरोध निवारण तंत्र
छठा, 74 – विरोध निवारण तंत्र,
सप्तम, 52 – संघर्ष और रक्तपात–रोधी तंत्र,
छठा, 64 – विरोध निवारण तंत्र,
छठा, 42 – क्रोध–निवारण तंत्र,
छठा 43 – क्रोध–निवारण तंत्र,
सप्तम, 12 – सभा में प्रभावोत्पादकता हेतु तंत्र,
द्वितीय, 27 – विवाद में शत्रु विरोधी तंत्र,
छठा, 94 – किसी को इच्छादास बनाने हेतु तंत्र,

VII गृहस्थी, कृषि, पशुधन, व्यापार, घूत और स्वजनों की समृद्धि हेतु तंत्र

तृतीय, 12 – गृह निर्माण के लिए प्रार्थना,
छठा, 142 – अन्न–रोपण के समय आशीर्वाद
छठा, 79 – अधिक अन्न प्राप्ति के लिए तंत्र
छठा, 50 – कृषि–नाशी–कीटों की झाड़फूंक,
सप्तम, 2 – बिजली गिरने से अन्न की रक्षार्थ तंत्र,
द्वितीय, 26 – पशुधन की समृधि हेतु तंत्र,
तृतीय, 14 – पशुधन की समृद्धि हेतु तंत्र,
षष्ठ, 59 – पशुधन के रक्षार्थ अरुंधती पौधे की प्रार्थना
षष्ठ, 70 – गाय की बछड़े के प्रति ममता बढ़ाने हेतु तंत्र
तृतीय, 28 – जुड़वां बछड़ों के अनुष्ठान मंत्र,
षष्ट, 92 – चपल घोड़े के दान का तंत्र,
तृतीय, 13 – नदी से नई नहर के लिए तंत्र,
षष्ठ, 106 – अग्नि से रक्षा के लिए तंत्र,
चतुर्थ, 3 – जंगली–जंतुओं और दस्युओं के विरूद्ध चरवाहों का तंत्र,
तृतीय, 15 – व्यापारी की प्रार्थना,
चतुर्थ, 38 अ – द्यूत क्रीड़ा में सफलता का तंत्र,
ब – भटके हुए बछड़ों की वापसी के लिए प्रार्थना,
सप्तम, 50 – जुए में जीत के लिए प्रार्थना,
छठा, 56 – घरों से सरीसृप रोधी झाड़फूंक,
दशम, 4 – पेडू अश्व का आह्वान मंत्र जो सरीसृप रोधी है,
एकादश 2 – भय–मुक्ति हेतु भव और सर्व की प्रार्थना,
सप्तम, 9 – खोई सम्पत्ति प्राप्ति हेतु तंत्र,
षष्ठ, 128 – ऋतुदेव का अनुष्ठान,
एकादश, 6 – आपदा मुक्ति हेतु सर्वदेव प्रार्थना,

VIII पाप और अपवित्रता के प्रायश्चित हेतु अनुष्ठान

षष्ठ, 45 – मानसिक उत्पात विरूद्ध तंत्र,
षष्ठ, 26 – दुराचार रोधी तंत्र,
षष्ठ, 114 – बलि के अशुद्धि के प्रति अनुष्ठान तंत्र,
षष्ठ, 115 – पाप के विरूद्ध अनुष्ठान,
षष्ठ, 112 – ज्येष्ठ भ्राता के पराभव के लिए अनुष्ठान,
षष्ठ, 113 – विशिष्ट जघन्य अपराधों के विरूद्ध अनुष्ठान,
षष्ठ, 120 – पाप मुक्ति के बाद स्वर्ग के लिए प्रार्थना,
षष्ठ, 27 – अशुभ पक्षी समझे जाने वाले कपोत के विरूद्ध तंत्र,
षष्ठ, 29 – अशुभ समझे जानेव वाले कपोत और उलूक के विरूद्ध तंत्र,
षष्ठ, 64 – अशुभ पक्षी के प्रभाव से ग्रस्त व्यक्ति के प्रति अनुष्ठान,
षष्ठ, 46 – दुस्वप्नों के प्रति झाड़फूंक
सप्तम, 115 – दुर्गुण निवारण और सद्गुणों के लिए तंत्र,

III

इस प्रकार यह देखा जा सकता है कि अथर्ववेद मात्र जादू–टोनों, इन्द्रजाल और जड़ी–बूटियों की विद्या है। इसका चौथाई भाग जादू–टोनों और इन्द्रजाल से युक्त है। किन्तु यही सच नहीं है कि केवल अथर्ववेद में ही जादू–टोने और इन्द्रजाल की भरमार है, ऋग्वेद भी इससे अछूता नहीं है। इसमें भी काले जादू–टोनों और इन्द्रजाल संबंधी मंत्रों की भरमार है। मैं ऐसे विषयों पर कुछ सूक्त उद्धृत करता हूं:

सूक्त – 17 वां (145)

सेवा में,

नाम .....

पता .....

.....

.....

देवता अथवा इस मंत्र का उद्देश्य सौत से छुटकारा पाना है। ऋषि इन्द्राणी है, अंतिम पद का छंद पंक्ति है, शेष अनुष्टुप है।

1. मैंने यह अतिशक्तिशाली बल्लरी प्राप्त की है, जो सपत्नी का विनाश करती है, जिसके द्वारा वह स्त्री अपने पति को पुनः प्राप्त करती है।

2. हे शुभ देवों द्वारा प्रेषित, शक्तिशाली (गुल्म) मेरी सौत का नाश कर और मेरे पति को केवल मेरा बना।

3. हे श्रेष्ठ (गुल्म) मैं भी श्रेष्ठों में श्रेष्ठ बनूं और वह जो मेरी सौत है, घृणितों में घृणित बनें।

4. मैं उसका नाम भी नहीं लूंगी, कोई उससे प्रसन्न न हो, अन्य सौतों को दूर भगा।

5. मैं विजयी हूं, तू विजेता है, हम दोनों शक्तिशाली होने के कारण सौत पर विजयी होंगें।

6. मैं तुझे विजयी बनाती हूं। जड़ी अपने सिरहाने, मैं तुझे रखती हूं मुझे और विजयी बना। तेरा मानस मुझ से मिल जाए जैसे एक गाय अपने बछड़े से मिलती है। वह जल की भांति अबाध प्रवाहित हो।

सूक्त चतुर्थ – (155 वां)

एक और चौथे मंत्र का देवता विघ्ननाशक (अलक्ष्यविघ्न) है, 2 और 3 का ब्राह्मणस्पति, 5 का विश्वदेव, भारद्वाज पुत्र श्रिम्बिठ ऋषि हैं। छंद अनुष्टुप् है।

1. दीनहीन, अभागी, कुरूप (देवी) उन शोषितों के साथ अपने पर्वत पर जा, मैं तुझे डरा कर भगाता हूं।

2. वह इससे डरे (संसार), दूसरे से डरे (संसार), सर्वगर्भक्षरण करने वाली, तीव्र विषाण बृहस्पति आ, कष्टों को दूर कर।

3. उस काष्ठ को ग्रहण कर जो गहन समुद्र में मनुष्य से दूर बहता है। अदमनीय (देवी) दूर समुद्र में जा।

4. असंगत स्वरों का जाप करने वाले जब सहज रूप से बढ़ते हैं, तू उन्हें भगाता है। इन्द्र के सभी शत्रुओं का नाश हो गया, वे बुलबुलों की भांति विलीन हो गए।

5. ये (विश्वदेव) चुराए गए पशु लौटा ला उन्होंने अग्नि जागृत की, उन्होंने देवताओं को भोजन दिया, उन्हें कौन जीत सकता है।

सूक्त 12 वां (163)

क्षय रोग निवारणः क्षषि कश्यपपुत्र विव्रीहन है। छंद है अनुष्टुप्।

1. मैं तेरा चक्षु रोग हरण करता हूं। तेरी शिरोपीड़ा, तेरी नासिका, कर्ण, ठोड़ी, मानव, जिव्हा का रोग हरण करता हूं।

2. तेरी ग्रीवा, तेरी नासिका, तेरी अस्थियों, तेरे संधि–क्षेत्रों, तेरे बाहु, तेरे स्कंध, तेरे बाजुओं का रोग हरता हूं।

3. मैं तेरी अंतड़ियों, तेरी गुदा, उदर, हृदय, गुर्दे, यकृत और अन्य अंगों का रोग मिटाता हूं।

4. मैं तेरी जंघाओं, घुटनो, एडियों, पंजों, कमर, नितंबों और गुप्तांगों का रोग हरता हूं।

5. मैं तेरे मूत्र–मार्ग, मूत्र–ग्रंथि, बालों, नाखूनो, समस्त शरीर का रोग नष्ट करता हूं।

6. मैं तेरे प्रत्येक अंग, प्रत्येक बाल, प्रत्येक जोड़, जहां भी रोग हो, उस को मिटाता हूं।

और क्या चाहिए जिससे स्पष्ट होता है कि वेदों में ऐसा कुछ नहीं है जिससे आध्यात्मिक अथवा नैतिक उत्थान का मार्ग प्रशस्त होता हो। न तो उसकी विषय–वस्तु और न ही उसका स्वरूप, वेदों में संशयहीनता और औचित्य ठहराता है, जिसके ढोल पीटे गए हैं। तब ब्राह्मणों ने इतनी दृढ़ता से उन पर पवित्रता का मुलम्मा चढ़ाकर संशय रहित क्यों घोषित किया?

साभार :
बाबा साहेब डॉ. अम्बेडकर
सम्पूर्ण वाङ्मय, खण्ड–8
पेज संख्या 43 से 62 तक
डॉ. बी. आर. अम्बेडकर

Youtube पर Dravid Bharat Channel को Subcribe करें और दबायें।